ग्रामीण महिला विकास संस्थान

Gramin Mahila Vikas Sansthan

GMVS

वार्षिक प्रतिवेदन 2022–2023

ANNUAL REPORT 2022-23

Website : www.gmvs.org.in

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

जनहित व सेवा कार्यों में लगातार सक्रिय...

संस्थान की गतिविधियाँ

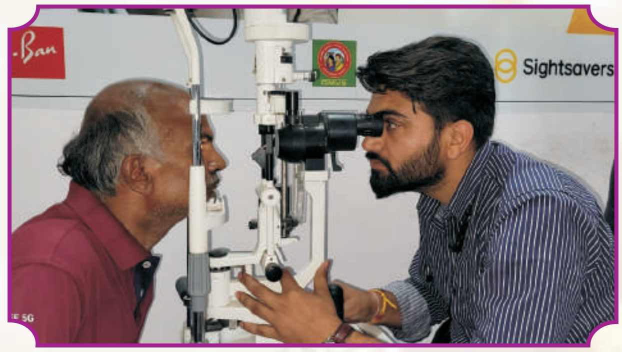

सुरेश सिंह रावत
विधायक, पुष्कर
पूर्व संसदीय सचिव
राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

कार्यालय :
यूनिवर्सिटी तिराहे के पास
भूणाबाय, अजमेर (राजस्थान)
निवास : बाबा फार्म, मु.पो.–मुहामी,
वाया–गगवाना, जिला–अजमेर (राजस्थान)

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बुबानी–किशनगढ़, जिला अजमेर द्वारा हर वर्ष की भाँति वर्ष 2022–23 की कार्य गतिविधियों का संकलन अपने वार्षिक प्रतिवेदन में प्रकाशित किया जा रहा है।

बालिका के जन्म से लेकर आत्मनिर्भर बनाने तक सरकार उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है। महिलाओं को आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनाने के लिये हमने भामाशाह योजना में उसे परिवार का मुखिया बनाया है और महिला स्वयं सहायता समूह तथा कौशल विकास के माध्यम से उन्हें आर्थिक रूप से आत्म–निर्भर बनाने का प्रयास किया है। इसके अलावा विधवा, तलाकशुदा महिलाओं के लिये भी अनैक योजनाएँ चलाई जा रही है तथा महिलाओं का विकास हमारी मुख्य प्राथमिकता है।

यह सराहनीय है कि संस्थान महिला स्वयं सहायता समूह, उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ–साथ महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, जन चेतना, जल संरक्षण, किसान संवर्धन, बालश्रम उन्मूलन, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि क्षेत्रों में कार्य कर रहा है।

(सुरेश सिंह रावत)
विधायक, पुष्कर

अनिल कुमार माथुर
अध्यक्ष
ग्रामीण महिला विकास संस्थान

अध्यक्षीय सम्बोधन

मुझे यह वार्षिक रिर्पोट प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। ग्रामीण महिला विकास संस्थान ने सदैव ग्रामीण महिलाओ के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए कार्य किया है। हमारा उद्देश्य महिलाओ को स्वावलंबी बनाना, उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त करना और उनके विकास के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध करवाना है।

इस वर्ष हमने विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमो आजिवीका संवर्धन योजनाओं और सामुदायिक विकास पहलों के माध्यम से सैंकडो महिलाओ तक अपनी पहुॅच बनाई है। विशेष रूप से सिलाई प्रशिक्षण केन्द्रों, स्वयं सहायता समूहों और वित्तीय साक्षरता अभियानों ने महिलाओ को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संस्थान की इस सफलता के पीछें हमारे समर्पित कार्यकर्ताओं सहयोगी संगठनों, दाताओं और सभी शुभचिंतकों का अमूल्य योगदान रहा है। मैं आप सभी का हार्दिक आभार व्यक्त करता। जिनकी बदौलत यह सफर संभव हो पाया है।

आने वाले वर्षो में, हम अपने प्रयासों को और अधिक मजबूत करेगें, ताकि अधिक से अधिक महिलाओ तक सहायता पहुॅच सके और वे आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ सके। हम सभी के सहयोग से, एक सशक्त समाज के निर्माण की दिशा में निरंतर कार्य करते रहेगे।

(अनिल कुमार माथुर)
GMVS अजमेर

शंकरसिंह रावत
निदेशक
ग्रामीण महिला विकास संस्थान

निदेशक की कलम से .....

मुझे यह 26वीं वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। ग्रामीण महिला विकास संस्थान सदैव ग्रामीण महिलाओ के सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्व रहा है, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सके। और अपने परिवार व समाज के आर्थिक विकास में योगदान दे सके।

इस वर्ष हमने अपने मिशन की दिशा में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियॉ हासिल की है। हमारे कौशल विकास कार्यक्रम, स्वयं सहायता समूह, आजिविका सहायता, और सिलाई प्रशिक्षण केन्द्रो के माध्यम से हजारो महिलाओ को सशक्त बनाने का कार्य किया गया है। वित्तीय साक्षरता और सामुदायिक विकास योजनाओ ने भी उनके सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाई है।

यह सब हमारे सहयोगी संगठनों, दाताओं, स्वयंसेवको और हमारी समर्पित टीम के अथक प्रयासो के बिना संभव नही हो सकता था। मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हुँ, जिन्होंने हमारे इस प्रयास में योगदान दिया।

हमारी यात्रा यही समाप्त नही होती, बल्कि हम अपने प्रयासो को और विस्तृत करने के लिए प्रतिबद्व है, ताकि अधिक से अधिक महिलाओ तक पहुॅच बनाई जा सके और उन्हें उनके उज्जवल भविष्य के लिए सक्षम बनाया जा सके।

(शंकर सिंह रावत)
GMVS अजमेर

Gramin Mahila Vikas Sansthan (GMVS)
Area of Operation and Office Locations

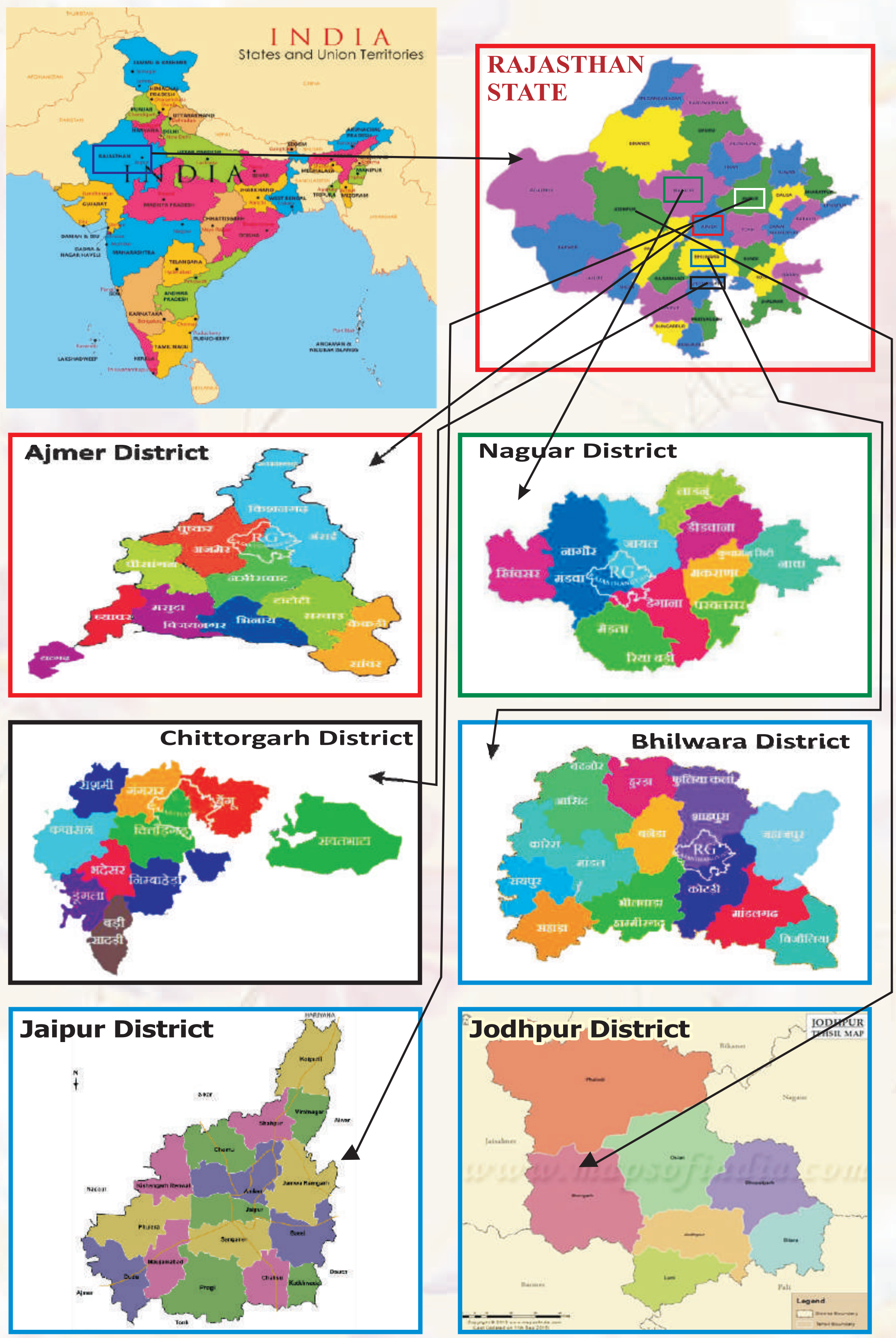

ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी, अजमेर राज.
Gramin Mahila Vikas Sansthan-Bubani, Ajmer, Raj.

पृष्ठभूमि :-

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी (अजमेर), राजस्थान संस्था पंजीकरण सोसायटी अधिनियम 1958 की धारा 28 एवं आयकर अधिनियम 1961 की धारा 12–ए व 80जी तथा FCRA एक्ट 1976 के अधीन पंजीकृत एक स्वयं सेवी संस्था हैं।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी (अजमेर), मानव समाज कल्याण के उद्धेश्य से गठित स्वैच्छिक संगठन है। जो विशेष रुप से ग्रामीण महिलाओ के विकास और उत्थान के लिए वृहद स्तर पर ग्रामीण समुदाय के सामाजिक सशक्तिकरण एवं आजीविका संवर्द्धन के लिए निरन्तर कार्य कर रही है। संस्था समाज मे व्याप्त सामाजिक समस्याओं जैसे– स्वास्थ्य, शिक्षा, बच्चो की देखभाल, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार आदि सामाजिक मुद्दो पर 1998 से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमो का संचालन कर रही है। वर्तमान में संस्था राजस्थान के 05 जिलों यथा अजमेर, चित्तौड़गढ़, नागौर, जयपुर व भीलवाड़ा में विभिन्न गतिविधियों का संचालन कर रही हैं।

विजन :-

ऐसे सशक्त समाज की स्थापना करना जहाँ ग्रामीण महिलाओं की स्थिति को सुदृढ बनाने तथा साथ ही समाज के हर वर्ग को आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य व रोजगार की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाया जाये।

मिशन :-

मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग से पिछड़े, अभावग्रस्त, ग़रीब समाज की महिलाओं को स्वयं सहायता समूह, कलस्टर व फेडरेशन के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से सशक्त करना ग्रामीण लोगों, वंचित वर्ग खासकर महिलाओं / बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पेयजल व आजीविका के साधन सुनिश्चित करवाना।

संस्था के उद्देश्य –

- समस्याग्रस्त गाँवों में स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था करने में गाँव वालों की मद्द करना।
- ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीणों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें अच्छा स्वास्थ्य बनाये रखने में मदद करना एवं मातृ–शिशु कल्याण कार्यक्रम को गॉव–गॉव तक पहुँचाना।
- कृषि एवं पशुपालन के लिए ग्रामीणों को आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराकर उन्हें ज्यादा पैदावार एवं ज्यादा पशुपालन में उनकी समस्याओं को कम करने में मदद करना।
- महिला विकास में ग्रामीण महिलाओं की रूचि पैदा करना तथा महिला कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं की समस्याओं के निराकरण के लिये महिला मण्डल एवं महिला गोष्ठियों का आयोजन करना।
- ग्रामीण दस्ताकारो को बढावा देने मे सहयोग एवं रोजगार उपलब्ध कराना।
- निम्न आय वर्ग के लडके लडकियों को उचित शिक्षा दिलवाने की व्यवस्था करना।
- राजस्थान या राजस्थान के बाहर स्थित संस्थाओं जिनका उद्देश्य ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी जैसा होगा उनसे सहयोग प्राप्त करना एवं गतिविधियों में तालमेल बनाये रखना।
- सडक दुर्घटनाओं को कम करना।
- पर्यावरण स्वच्छ रखने के लिए पेड पौधो की जागरूकता रखना।
- भूमि कटाव को रोकने हेतु मेड बन्दी।
- महिलाओं को विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से आधुनिक तकनीकों से जोडना।

- सामुदायिक विकास कार्यक्रम को बढावा देना।
- महिला व बाल विकास कार्यक्रम का संचालन व लोगो को जागरूक बनाये रखना।
- संस्था के उद्देश्यों एवं कार्यकलापो को प्रचारित करना, किताबो का मुद्रण एवं प्रकाशन तथा पुस्तकालयों की स्थापना करना।
- ग्रामीण दस्तकारी को बढावा देने में सहयोग करना क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा करने हेतु खादी ग्रामोद्योग की गतिविधियों को बढावा देने के लिए नियमानुसार ऋण प्राप्त करना।
- संस्था के द्वारा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सेवाये प्रदान की जायेगी जैसे HIV/AIDS जागरूकता, सामुदायिक स्तर पर ऑखो की जॉच, माता व शिशु स्वास्थ्य पर क्षेत्र विशेष हेतु कार्यक्रम।
- क्षेत्र में अधिक संख्या में ट्रक ड्राईवर परिवारों के होने के कारण संस्था ट्रक ड्राईवर के परिवारों के साथ स्वास्थ्य, शिक्षा व आजीविका पर कार्य करेगी।
- इसके अतिरिक्त संस्था ग्रामीण व शहरी क्षेत्रो में सभी विकास के कार्य क्षेत्र की आवश्यकतानुसार करेगी।
- ट्रक चालको एवं क्लीनरों की ऑखों की जॉच कर चश्मा प्रदान करना तथा नियमित ऑखों की जॉच तथा देखभाल हेतु प्रेरित करना।
- संस्था ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रो में तकनिकी प्रोत्साहन एवं कौशल विकास पर कार्य करेगी।
- संस्था महिलाओं की फेडरेशन को मजबूत करने एवं SHG बनाने व सशक्त करने का कार्य करेगी।
- संस्था मानवीय आवश्यकता हेतु समुदाय को लगातार जाग्रत करेगी।
- संस्था द्वारा शिक्षा प्रसार हेतु शिक्षण कार्य कराया जायेगा एवं तकनिकी विज्ञान प्रशिक्षण की व्यवस्था कराई जायेगी।
- संस्था द्वारा प्राकृतिक सौन्दर्य को बढाने एवं प्रदूषण दूर करने हेतु बंजर भूमि पर वृक्षारोपण का कार्य करने की व्यवस्था करेगी।
- महिला अधिकारों के प्रति सदस्यों को सजग करना एवं अधिकार प्राप्ति हेतु वातावरण का निर्माण करना एवं महिला सशक्तिकरण के द्वारा उनकी परिवार एवं समाज में बेहतर जगह बनाना।
- ऐसी गतिविधि करना जिससे गरीब महिलाओं, स्वयं सहायता समूहो तथा उनके परिवार का सामाजिक व आर्थिक उत्थान हो सके।
- महिलाओं की सामाजिक कार्यो में सहभागिता सुनिश्चित करना।
- संस्था आर्थिक रूप से गरीब छात्रों को अपने अध्ययन हेतु पुस्तको एवं फीस आदि की निःशुल्क व्यवस्था करेगी।
- लघु वित्त उद्यमिता पर प्रशिक्षण व कौशल विकास का कार्य करना।
- महिलाओं की जरूरतो जैसे मातृत्व संरक्षण, साक्षरता, शिक्षा, रोजगार और प्रशिक्षण आदि के अवसरो को बढाना ताकि समाज के विभिन्न वर्गो में उन्हें पर्याप्त ध्यान व संसाधन मिल सके।
- स्कूल और कॉलेजो मे जागरूकता बैठके कर किशोर बालिकाओं को स्वास्थ्य, प्रजनन व यौन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराना।
- ट्रक चालको एवं क्लीनरो के बच्चो को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति दिलाना।

राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम (साईट सेवर्स) 2022-23
Raahi Truckers Eye Health Program (Sight Savers) 2022-23

पृष्ठभूमि : साईट सेवर्स इंडिया ने 2017 में Raahi प्रोग्राम की शुरूआत की थी, जिसका उद्देश्य भारत में ट्रक चालको की आंखो की सेहत में सुधार लाना है। यह कार्यक्रम विशेष रूप से उन ट्रक चालको पर केंद्रित है जो गोल्डन कव्ड्रिलेटरल, नॉर्थ–साउथ और ईस्ट–वेस्ट हाईवे पर यात्रा करते है। 2017 से 2022 तक इस प्रोग्राम ने 16 राज्यो के 54 शहरो में 19 विजन सेंटर्स और 39 कैम्प स्थानो के माध्यम से लगभग 5.4 लाख ट्रक चालको तक पंहुच बनाई। साईट सेवर्स व रेबन के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा संचालित राष्ट्रीय ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम के तहत जून 2018 से सभी ट्रक ड्राईवरो व क्लिनर की निःशुल्क ऑखो की जॉच व चश्मे वितरण किये जा रहे है। साथ ही जयपुर से ब्यावर व मकराना से गुलाबपुरा नेशनल हाईवे पर लगभग 500 किमी. तक एक माह में 3 से 4 नेत्र जॉच शिविर आयोजन किया जाता है।

जिसमें ऑखो की जॉच के साथ ही ब्लड शुगर, रक्तचाप, वजन ऊँचाई का मापन आदि मापने के कार्य किये जाते है। फिर उन्हें विजन टेक्निशियन के पास ऑखों कि स्क्रिनिंग के लिए भेजा जाता है। वहॉ से उन्हे अलग–अलग ग्रेड मिलती है। जिस आधार पर ऑपटोमेट्रिस्ट उनकी ऑखो की जॉच करता है। यदि उन्हें चश्में की आवश्यकता होती है तो ही वह उन्हें चश्मा वितरण के लिए कहता है।

साथ ही टीम द्वारा सभी ड्राईवरों को स्वास्थ्य शिक्षा व आर्थिक स्थिति के बारे में विस्तार से समझाया जाता है। सभी ट्रक ड्राईवरो को यह भी बताया जाता है कि प्रत्येक 6 माह से अपनी ऑखो की जॉच करवाना अनिवार्य है। उन्हें पोष्टिक आहार व ऑखों की सही देखभाल के लिए प्रेरित किया जाता है।

साईट सेवर्स के वित्तीय सहयोग से जो विजन सेन्टर वर्ष 2018 में खोला गया था वह लामाना में एन.एच. रोड से 100 मीटर की दूरी पर बना हुआ था। अब वर्ष 2019 में यह विजन सेन्टर किशनगढ में देव मार्केट, मकराना राज होटल के सामने, तोलामाल में स्थानान्तरित कर दिया है। इस कार्यक्रम में 5 कार्यकर्ताओ की टीम है। एक ओप्टोमेट्रिस्ट, दो सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता, एक सहायक ऑप्टोमेट्रिस्ट व एक लेखाकार है। विजिन सेन्टर में प्रथम टेबल पर ट्रक ड्राईवरो व क्लीनरों का रजिस्ट्रेशन किया जाता है, दूसरी टेबल पर स्क्रीनिंग टेस्ट व तृतीय टेबल पर ऑप्टोमेट्रिस्ट होता है। सब से पहले कम्यूनिटी हेल्थ वर्कर होटल पर आये हुए ड्राइवरो से बात कर उन्हे आँखों की जाँच करवाने हेतु प्रेरित करता है और उन्हे सेन्टर पर भेजता है टेबल न. 1 पर ट्रक ड्राइवरों को बैठा कर उनका आई कार्ड बनाया जाता है व उनसे ड्राइविंग लाईसेन्स मांगा जाता है। साथ ही अन्य जानकारी जैसे नाम, उम्र, मोबाईल नम्बर, ड्राइविंग लाईसेन्स, रिन्यूवल की दिनांक, वेतन, उनकी गाडी का रूट, जाति, जीवन, मेडिकल व अन्य बीमा है या नहीं, शराब व सिगरेट पीने की आदत, दूर से उन्हे कैसा दिखता है, मेडिकल जाँच करवाते है या नहीं, कभी उनका एक्सीडेन्ट तो नहीं हुआ आदि विभिन्न प्रकार की जानकारी लेते है। उसके बाद टेबल नम्बर 2 पर उनकी आँखों की जाँच की जाती है और उसके बाद उनको ग्रेड दी जाती है। यदि ग्रेड ए मिली होती है तो ड्राईवर पुनः 1 नम्बर टेबल पर जाता है और यदि अन्य ग्रेड मिली होती है तो 3 नम्बर टेबल पर जाता है और उसे कौन से नम्बर का चश्मा लगेगा यह जाँच किया जाता है। यदि उसे पास की नजर की परेशानी होती है तो उसे उसी वक्त चश्मा दे दिया जाता है और यदि दूर का या बाय फोकल आता है तो उस चश्में का आर्डर दिया जाता है जो कि टेबल नम्बर 1 पर होता है।

उद्देश्य–

1. ट्रक चालको की ऑखों की समस्याओ की पहचान के लिए नियमित स्क्रीनिंग आयोजित करना।
2. जिन्हे चश्में की आवश्यकता होती है, उन्हें उचित चश्में प्रदान करना।
3. ट्रक चालको की दृष्टि सुधारने के माध्यम से सडक दुर्घटनाओ की संख्या में कमी लाना।
4. ट्रकर्स को प्राईमेरी आई केयर सर्विसेज उपलब्ध करवाना जिनको जाँच व रिफ्रेकशन की जरूरत हैं उन्हें इस कार्यक्रम के द्वारा मद्द करना।
5. आँखों के स्वास्थ्य की महत्वता को ध्यान में रखकर लोगों को जागरूक करना।

6. तकनीकी की मद्द से सारे ट्रक ड्राईवरों का डाटा एकत्रित करना।

7. राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कार्यक्रम के नाम से ही स्पष्ट है। इसका मुख्य उद्देश्य ट्रक ड्राईवर्स, क्लीनर्स की आँखों की जाँच कर उन्हें चश्मा वितरण करना, आँखों को सुरक्षित रखने के लिए समय–समय पर उनकी जाँच करवाना नियमित रुप से आँखो को ठण्डे साफ जल से धोना चाहिए व अन्य जानकारी उपलब्ध करवाना जिससे वे अपनी आँखों का बेहतर तरीके से ध्यान रख सके।

8. आँखों की देखभाल करने के साथ–साथ अपनी व अपने परिवार की सम्पूर्ण सेहत का ध्यान रखने के लिए प्रेरित करना है। सड़क दुर्घटनाओं को कम करना।

9. समय न मिल पाने के कारण जो ट्रक ड्राईवर व क्लीनर आँखो की जाँच नहीं करवा पाते है उन्हें उनके रास्ते में ही आँखो की जाँच का केन्द्र उपलब्ध करवाना।

10. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को उनके स्वास्थ्य व बेहतरीन जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।

11. ट्रक ड्राईवर्स तथा उनके परिवार को सुरक्षित भविष्य दिलवाना।

12. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना।

13. कम आय के कारण ट्रक ड्राईवर व क्लीनर अपनी आँखों की जाँच नहीं करवा पाते हैं इस समस्या को दूर करने के लिए उन्हें इस कार्यक्रम के माध्यम से उनके कार्यस्थल पर आँखों की जाँच की सेवायें व चश्में आसानी से उपलब्ध करवाना।

14. जानकारी के अभाव में वे अपनी आँखों में जलन होने, पानी आने व अन्य समस्या पर ध्यान न देकर इसे सामान्य समस्या या आँखें की थकावट का कारण समझते हैं ऐसी स्थिति में उन्हें आँखें कमजोर होने व समय के साथ–साथ आँखों की रोशनी कम हो जाती है। इसकी जानकारी देना जिससे वे अपनी समस्या के प्रति जागरुक हो और इस ओर ध्यान दें।

15. उन्हें अपनी सेहत की महत्ता समझाना व बताना की स्वास्थ्य ही मनुष्य के जीवन का सबसे बडा धन है। अगर हम शारीरिक रुप से स्वस्थ रहेंगें तो ही मानसिक व अन्य रुप से स्वस्थ व खुश रहेंगें, जिससे हर कार्य अच्छे से कर पाएंगें। अपने जीवन के लक्ष्य प्राप्त करेंगें व अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत कर पाएंगें। अतः स्वस्थ रहना आवश्यक है।

गतिविधियाँ –

1. एक विजन सेन्टर की स्थापना करना तथा विभिन्न होटलो पर केम्प आर्गेनाइज करना– प्रशिक्षित ऑपटोमेट्रिस्ट, ऑपथेल्मिक असिस्टेन्ट के द्वारा विभिन्न होटलो पर केम्प आयोजित कर उन ट्रक ड्राईवरों को कवर करना जो की रास्ते से निकल रहे है।

2. ट्रकिंग समुदाय के लिए नेत्र स्वास्थ्य शिक्षा– नेत्र देखभाल से संबन्धित भेद्यता और जोखिम को कम करने के लिए दृष्टिकोण, सूचना और कौशल के साथ ट्रक ड्राईवरों के बीच नेत्र स्वास्थ्य की मांग को बढावा देने के लिए ट्रकर्स समुदाय के साथ विभिन्न आईईसी गतिविधियाँ करना।

3. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच– कार्यक्रम के अन्तर्गत विजन सेन्टर (लामाना), विभिन्न होटल जैसे जगदम्बा, लाडी, राज चिडिया, ट्रांसपोर्ट नगर, एच.पी. गैस प्लांट व बी.पी. गेस प्लांट पर आँखे जाँचने हेतु शिविर आयोजित किया जाता है। जिसमें जून से लेकर मार्च 2019 तक लगभग 3981 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई उसके बाद अप्रैल 2019 से मार्च 2020 तक लगभग 6942 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई, वर्ष अप्रैल 2021 से मार्च 2022 तक लगभग 5158 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई, वर्ष अप्रैल 2022 से मार्च 2023 तक लगभग 6498 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई। इस प्रकार कार्यक्रम के प्रारम्भ होने से लेकर मार्च 2023 तक कुल 29363 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई।

4. चश्मों का वितरण– ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच करने के बाद यदि उन्हें देखने में परेशानी होती है तो आँखों की जाँच के अनुसार समस्या का पता कर उन्हें पास व दूर के चश्मे वितरीत किए जाते है। जिनको पास की नजर में परेशानी होती है उन्हे पास की नजर का चश्मा उसी वक्त दे दिया जाता है और जिन्हें दूर की नजर में परेशानी होती है उनके लिए चश्मा ऑर्डर किया जाता है। जो एक सप्ताह बाद आ जाता है और ट्रक ड्राईवरों के वापस आने पर उन्हें दे दिया जाता है। जून से लेकर माह

मार्च 2019 तक 1300 चश्में वितरीत किए गए, अप्रेल 2019 से मार्च 2020 तक 1966 चश्में वितरीत किए गए तथा अप्रेल 2020 से मार्च 2021 तक 2295 चश्में वितरीत किए गए, अप्रेल 2021 से मार्च 2022 तक 3195 चश्में वितरीत किए गए तथा अप्रेल 2022 से मार्च 2023 तक 2495 चश्में वितरीत किए गए। इस प्रकार कार्यक्रम के प्रारम्भ होने से लेकर मार्च 2023 तक कुल 11220 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों को चश्में वितरीत किए गए।

5. जागरूकता फैलाना– राही ट्रक्स आई हेल्थ कार्यक्रम के द्वारा सभी ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों को जीवन बीमा, एक्सीडेण्ट बीमा करवाने के साथ ही समय–समय पर बी.पी., शुगर चेक करवाने, मंथली हेल्थ चेकअप, आँखों की जाँच करवाने, पोष्टिक आहार खाने व काम के साथ–साथ अपनी सेहत को भी महत्वता देनी चाहिए इत्यादि के बारे में जागरूकता फैलायी जाती है।

6. विश्व दृष्टि दिवस पर स्वास्थ्य केम्प का आयोजन– विश्व दृष्टि दिवस के अवसर पर राही ट्रक्स आई हेल्थ कार्यक्रम तथा हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम के द्वारा नेशनल हाईवे 79 पर रामपुरा गाँव में आई हेल्थ केम्प का आयोजन किया गया जिसमें अन्तर्गत 60 ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों के आँखों की जाँच की गई तथा साथ ही उनके परिवार की स्वास्थ्य जाँच भी की गई जिसके अन्तर्गत 20 ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को चश्में वितरित किये गये। 64 व्यक्तियों ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया तथा 13 गर्भवती महिलाओं ने भी शिविर में स्वास्थ्य जाँच कराई और दवाईयाँ प्राप्त की।

7. प्रचार–प्रसार कर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना– राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम अन्तर्गत पेम्पलेट बाँट कर व बेनर लगाकर प्रचार–प्रसार किया जाता है तथा ज्यादा से ज्यादा ड्राईवरो को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

वर्ष	**विजन सेन्टर पर ओपीडी**	**केम्प पर ओपीडी**	**कुल OPD**	**कुल चश्मे वितरित**
जून 2018 से मार्च 2019	1344	2637	3981	1300
अप्रेल 2019 से मार्च 2020	3636	3306	6942	1966
अप्रेल 2020 से मार्च 2021	3667	1491	5158	2295
अप्रेल 2021 से मार्च 2022	4423	2361	6784	3164
अप्रेल 2022 से मार्च 2023	4808	1690	6498	2495
कुल	**17878**	**11485**	**29363**	**11220**

सभी गतिविधियों का प्रशिक्षण पाने के बाद दिनांक 22.06.2018 को पहला केम्प विजन सेन्टर लामाना मे रखा गया और उसके बाद से ही कार्यक्रम निरन्तर प्रगति कर रहा है तथा ज्यादा से ज्यादा ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों को कार्यक्रम के तहत लाभ प्रदान किया जा रहा है।

साईट सेवर्स के वित्तीय सहयोग से जो विजन सेन्टर खोला गया है वह लामाना में एन.एच. रोड से 100 मीटर की दूरी पर बना हुआ है। जिसमें 5 कार्यकर्ताओं की टीम है एक ओप्टोमेट्रिस्ट, दो सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता, एक सहायक ऑप्टोमेट्रिस्ट व एक लेखाकार है। विजन सेन्टर में प्रथम टेबल पर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों का रजिस्ट्रेशन किया जाता है, दूसरी टेबल पर स्क्रीनिंग टेस्ट व तृतीय टेबल पर ऑप्टोमेट्रिस्ट होता है। सबसे पहले कम्यूनिटी हेल्थ वर्कर होटल पर आये हुए ड्राइवरों से बात कर उन्हें आँखों की जाँच करवाने हेतु प्रेरित करता है और उन्हें सेन्टर पर भेजता है टेबल न. 1 पर ट्रक ड्राइवरों को बैठा कर उनका आई कार्ड बनाया जाता है व उनसे ड्राइविंग लाईसेन्स मांगा जाता है। साथ ही अन्य जानकारी जैसे नाम, उम्र, मोबाईल नम्बर, ड्राइविंग लाईसेन्स, रिन्यूवल की दिनांक, वेतन, उनकी गाडी का रूट, जाति, जीवन, मेडिकल व अन्य बीमा है या नहीं, शराब व सिगरेट पीने की आदत, दूर से उन्हे कैसा दिखता है, मेडिकल जाँच करवाते है या नहीं, कभी उनका एक्सीडेन्ट तो नहीं हुआ आदि विभिन्न प्रकार की जानकारी लेते है। उसके बाद टेबल नम्बर 2 पर उनकी आँखों की जाँच की जाती है और उसके बाद उनको ग्रेड दी जाती है। यदि ग्रेड ए मिली होती है तो ड्राईवर पुनः 1 नम्बर टेबल पर जाता है और यदि अन्य ग्रेड मिली होती है तो 3 नम्बर टेबल पर जाता है और उसे कोनसे नम्बर का चश्मा लगेगा यह जाँच किया जाता है। यदि उसे पास की नजर की परेशानी होती है तो उसे उसी वक्त चश्मा दे दिया जाता है और यदि दूर का या बाय फोकल आता है तो उस चश्में का आर्डर दिया जाता है जो कि टेबल नम्बर 1 पर होता है।

केस स्टडी

पृष्ठभूमि– सुखपाल सिंह ग्राम बडरा कासमपुर के रहने वाले हैं। उनकी उम्र 51 वर्ष है। उनकी पत्नि का नाम रणजीत कॉर है जो 40 वर्ष की हैं। सुखपाल सिंह के दो बेटे हैं। उसके बड़े बेटे का नाम अमनद्वीप कॉर, उम्र–22 वर्ष है वह बी.ए. कर रहा है। उसके छोटे बेटे का नाम निर्मल सिंह उम्र–14 वर्ष है वह 8वी कक्षा में पढ़ता है। उसकी माता का नाम दलवीर कॉर व पिता का नाम बच्चन सिंह है।

कार्यक्रम से जुडाव– सुखपाल सिंह एक ट्रक ड्राइवर हैं। उनकी ट्रांसपोर्ट कम्पनी का नाम रिशी किरण रोड लाइन्स गांधीधाम है व 28 वर्ष से लगातार गाड़ी चलाने के कारण उन्हें अपनी स्वास्थ्य जाँच के लिये समय नहीं मिल पाता है। सुखपाल सिंह को एक साल से नजदीक देखने में ज्यादा दिक्कत आ रही है। अज्ञानता के कारण 14 साल की उम्र में सूर्य ग्रहण देखने के कारण दाई ऑख में नजर कम हो गई है। कुछ समय से वे सिर दर्द, आँख में पानी आना, आँखों में दर्द जैसी समस्या से पीड़ित है लेकिन समय न मिलने के कारण वे इन पर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। परिवार वालों के जोर देने पर वे डॉक्टर के पास गये और उन्हें अपनी समस्या बताई।

डॉक्टर ने उनकी जाँच की और उन्हें आँखे चैक करवाने को कहा। उसके बाद एक दिन वे बणी–ठणी होटल के पास अपनी गाडी का काम करवा रहे थे और वहाँ उनकी मुलाकात राही ट्रकर्स आई हेल्थ प्रोग्राम के स्वास्थ्य कार्यकर्ता से हुई। सुखपाल सिंह ने उसे अपनी आँखों की समस्या के विषय में बताया। हेल्थ वर्कर राजवीर सिहं ने उन्हें राही ट्रकर्स आई हेल्थ प्रोग्राम के बारे में बताया और उन्हें विजन सेन्टर पर आकर आँखें चैक करवाने को कहा। उसके बाद सुखपाल सिंह विजन सेन्टर पर गये और आँखों की जाँच करवा कर चश्मा प्राप्त किया और अब वे बहुत खुश हैं। जिसके लिए उन्होनें राही दृष्टि केन्द्र टीम का धन्यवाद किया तथा सुझाव दिया कि अपने ड्राईवर जीवन से आप अपने परिवार के लिए अपनी दैनिक आय को बचाकर अपने परिवार की आर्थिक समस्याओ को छू करके अच्छा परिवार बनाईये।

निष्कर्ष– अब उनकी सारी समस्याएँ समाप्त हो गई हैं। अब वे चश्मा पहनकर ही गाड़ी चलाते हैं। एक दिन वे अपना चश्मा घर पर ही भूल गये तो उनके बेटे ने उन्हें चश्मा लाकर दिया जिससे वे बहुत खुश हुए। अब उनका परिवार उनकी ओर से निश्चिन्त है।

लक्षित हस्तक्षेप परियोजना चित्तौड़गढ़ (माईग्रेन्ट टी. आई.)
Target Intervention Program Chittorgarh 2022-23

पृष्ठभूमि :–

राजस्थान स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी जयपुर के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा चित्तौड़गढ़ जिले में टी0 आई0 (TI) कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। चित्तौड़गढ़ जिले में पिछले 1 मार्च 2014 से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के माध्यम से निरंतर प्रवासी लोगों के उच्च जोखिम व्यवहार को जानकर उनको TI कार्यक्रम द्वारा सुविधा दी जा रही है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य एचआईवी एड्स से संक्रमित व्यक्तियों को सरकारी सुविधाओं से जोड़ना है। कार्यक्रम राजस्थान के स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी जयपुर राजस्थान के माध्यम से ग्रामीण महिला विकास संस्थान चित्तौड़गढ़ को यह शुभ अवसर निरंतर प्रदान किया जा रहा है, ताकि संस्थान प्रवासी लोगों के लिए चित्तौड़गढ़ जिले में एच आई वी एड्स जागरूकता कार्यक्रम का संचालन कर सके। संस्थान द्वारा प्रवासी लोगों को एचआईवी एड्स व टीबी के प्रति जागरूक करने के साथ–साथ परामर्श जांच की

सुविधा उपलब्ध करवाना है। 1097 टोल फ्री नंबर की जानकारी दी जा रही है।

मशीनी युग होने के बावजूद प्रवासी मजदूर लोगों का एक अपना एक महत्वपूर्ण योगदान भारत देश के प्रति समर्पित रहा है। भारत का एक बहुत बड़ा प्रवासी मजदूर लोगों का समुदाय रोजी–रोटी कमाने के लिए अनेक क्षेत्रों में रहकर साधारण जीवन यापन कर रहे हैं। प्रवासी मजदूर काफी मेहनती वर्ग है। इनके साहस और मेहनत के कारण विभिन्न क्षेत्रों में निर्माण कार्य, लोडिंग, अनलोडिंग का कार्य, सीमेंट फैक्ट्री, कपास फैक्ट्री, खाद फैक्ट्री, माइंस. होटल में कार्य करके योगदान कर रहे हैं। प्रवासी मजदूर के रूप में अपनी पहचान भारत में बनाए हुए हैं। राजस्थान राज्य के अनेक जिलों में प्रवासी लोग रहते हैं जो अपना जीवन यापन बहुत ही मुश्किल से कर पाते हैं, परंतु उन की मजबूरी है।

इस कार्यक्रम के तहत एचआईवी एड्स संक्रमित लोगों को जागरूक करना होता है, ताकि उनके जोखिम पूर्ण व्यवहार को बदलकर, उन व्यवहार में कमी लाई जा सके। जोखिम पूर्ण व्यवहार जैसे शराब का सेवन करना, एक से अधिक लोगों का उपयोग करना, अफीम, गांजा जैसे नशों का सेवन करना, यौन कर्मियों के साथ असुरक्षित यौन संबंध स्थापित करना इत्यादि। प्रवासी मजदूर लोगों जाने अनजाने उच्च जोखिम पूर्ण व्यवहार का हिस्सा बन जाते हैं। इसी कारण उन्हें व उनके परिवार को इसका भारी मूल्य चुकाना पड़ता है। देश में प्रवासियों के लिए कोई भी ऐसी सुविधा नहीं है, जिसके माध्यम से प्रवासियों को अपने क्षेत्र से निकलकर बाहर कमाने के लिए न जाना पड़े।

संस्थान प्रवासियों का रजिस्ट्रेशन करने के बाद, वन टू वन मीटिंग, ग्रुप मीटिंग करने के बाद, उनके व्यवहार की जानकारी लेना। तत्पश्चात परामर्श करने के बाद, निःशुल्क स्वास्थ्य जांच करवाई जाती है। TI कार्यक्रम का उद्देश्य, अनेक गतिविधियों के माध्यम से प्रवासी मजदूरों को संस्थान से जोड़ना व सरकारी गैरसरकारी योजनाओं की जानकारी उनको प्राप्त करवाना। इन योजनाओं से एचआईवी एड्स व टीबी से संक्रमित लोगों को व प्रवासियों को मिलने वाली श्रमिक कार्ड जैसी योजनाओं से जुड़वाना है। एचआईवी व टीबी की जांच पर लक्षण पाए जाने पर प्रवासी लोगों को ICTC ART सेंटर, डॉट सेंटर से जुड़वाना है। साथ ही उनको अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने के लिए निरंतर प्रेरित करना है। प्रवासी कार्यक्रम के तहत चित्तौड़गढ, सावा, निंबाहैड़ा, कपासन, चंदेरिया के विभिन्न क्षेत्रों पर जितनी भी फैक्ट्रियां है। वह उन स्थानों पर कार्यरत प्रवासी लोगों को TI कार्यक्रम की जानकारी प्रदान करने के साथ उनको TI से मिलने वाली सुविधाओं के बारे में भी जानकारी देनी है। उनको संस्थान से जोड़ना है। इन सभी जगह पर संस्थान द्वारा क्रियान्वित कार्यक्रम से प्रवासियों को सुविधा दी जा रही है। इन सभी लोगों के साथ उनके निवास स्थान कार्यस्थल के मिलने के स्थान पर जाकर संपर्क किया जाता है। इन प्रवासी लोगों को होटल, रेस्टोरेंट, चाय की दुकान, पान की दुकान, सब्जी या फल का ठेला, जनरल स्टोर, किराना स्टोर, वाइनशॉप, लेबर कालोनी तथा रेजिडेंस कॉलोनी आदि स्थानों पर मिल जा सकता है। यह प्रवासी फैक्ट्री क्षेत्र के आसपास ही रहकर अपना जीवनयापन करते हैं। TI कार्यक्रम के अंतर्गत इनको DIC की भी सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है। DIC में आकर इनको मनोरंजन, विश्राम, परामर्श, स्वास्थ्य सेवा, कंडोम आदि से जुड़ी जानकारी प्रदान की जाती है।

प्रवासी लोग अधिकतर अकेले आते हैं, परंतु कुछ प्रवासी लोग समूह में भी आते हैं। जिनमें उनके रिश्तेदार, दोस्त, सहकर्मी साथी होते हैं। यह वासी लोग जहां भी रहते हैं, एक ही कमरे में 10, 15, 20 लोगों का एक साथ समूह रहता है। कई बार कमरे में भी अधिक लोग रहते हैं। प्रवासी मजदूर का कार्य करने का समय 8 से 12 या 16 घंटे रहता है, क्योंकि वह लोग बाहर से आकर यहां काम कर रहे होते हैं। इस कारण यह लोग अधिक से अधिक काम करते हैं ताकि अधिक धन प्राप्त कर कुछ रुपया पैसा अपने घर गांव में ले जा सके। अधिकतर प्रवासी अपने परिवार पत्नी को छोड़कर यहां अकेले रहते हैं। वह जिन लोगों के साथ में रहते हैं। वह समूह में रहते हैं। इसके कारण इनको तरह–तरह की विचारधारा, अलग–अलग स्वभाव के लोगों से मिलना–जुलना होता है। इनमें एक ही कमरे में विवाहित–अविवाहित 18 से 50 साल के लोग एक साथ रहते हैं। जिसके कारण इनका व्यवहार कुछ जोखिम पूर्ण व्यवहार अपने आप ही हो जाता है। बहुत सारे लोगों का व्यवहार जोखिम पूर्ण नहीं रहता परंतु

जाने–जाने में उनका व्यवहार जोखिम पूर्ण हो जाता है। इसके कारण संक्रमण एक प्रवासी से दूसरे प्रवासी तक अन्य प्रवासियों में फैल जाता है, क्योंकि प्रवासी मजदूर अधिकतर कम शिक्षित रहते हैं। इसीलिए इनका हर पहलुओं पर जागरूकता कम होती है। HIV/AIDS & TB के प्रति प्रवासियों को जानकारी बिल्कुल नहीं होती है। इस कारण से HIV/AIDS & TB का प्रसार इनमें अधिक पाया जाता है।

भारत देश में HIV/AIDS & TB जैसे खतरनाक संक्रमणों से जूझ रहा है। राजस्थान के अधिकतर जिलों में HIV/AIDS & TB संक्रमित लोग रहते हैं। इनके अलावा हेपेटाइटिस B&C संक्रमित व्यक्तियों का भी इलाज करवाया गया। TI स्टाफ की सबसे बड़ी जिम्मेदारी HIV/AIDS & TB STI (यौनरोग) के साथ हेपेटाइटिस, कोरोना संक्रमित लोगों को सुरक्षित रखना है। वह दूसरों को सूचित रखने में सहयोगी बनना है।

GMVS **संस्थान की TI सेवाएं निम्नलिखित है :-**

1. **वन टू वन मीटिंग, ग्रुप मीटिंग :-** इनके माध्यम से प्रवासी लोगों को एक–एक या समूह में मिलना समूह पर चर्चा में बैठक करना। उनको HIV/AIDS & TB STI/RTI आदि के प्रति जागरूक करना संस्था के कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है । कंडोम का सही उपयोग करना, इसके प्रति जागरूक करना।

2. **मिड़ मीडिया :-**संस्थान द्वारा नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से प्रवासी लोगों को HIV/AIDS- STI/RTI के प्रति जागरूक करना। कंडोम का सही उपयोग,इसके प्रति जागरूक करना।

3. **जागरूकता शिविर :-** इसका आयोजन प्रवासियों को निशुल्क स्वास्थ्य शिविर की जानकारी देने के लिए किया जाता है. ताकि अधिक से अधिक संख्या में प्रवासी लोग अपनी जांच करवा सके।

4. **कांग्रेगेशन इवेंट्स :-** इसके माध्यम से जहां पर प्रवासी संख्या में अधिक से अधिक लोग एकत्रित होते हैं। वहां पर इस इवेंट के माध्यम से TI कार्यक्रम की जानकारी अधिक से अधिक लोगों को करवाना।

5. **डिमांडजनरेट गतिविधि :-** इस कार्यक्रम को प्रवासी लोगों की जरूरत के अनुसार करवाया जाता है। इसके माध्यम से HIV/TB, STI/RTI, कंडोम के प्रति जागरूक किया जाता है।

6. **एडवोकेसी :-** इस गतिविधि में प्रवासी लोगों के लिए की जाने वाली एडवोकेसी भी है जिसमें ठेकेदार, सरदार, सुपरवाइजर अन्य लोग जो प्रवासियों के लिए TI गतिविधियों के आयोजन में बाधक हो तो. उनको इस कार्यक्रम के माध्यम से समझाइश की जाती है। इसके लिए एडवोकेसी कमेटी बनी हुई है।

7. **रिव्यू मीटिंग :-** यह मीटिंग साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक होती है। इसके माध्यम से सभी स्टाफ के लोगों के कार्यों का अवलोकन PD, PM, M&E करते हैं। TI संबंधित सभी रिकॉर्ड्स जांच में डाटा मूल्यांकन का काम PD, PM, M&E की जिम्मेदारी होती है।

8. **क्राइसिस :-** प्रवासी लोगों के बीच में यदि कोई वाद–विवाद हो जाए तो, संस्थान के स्टाफ, क्राइसिस कमेटी के माध्यम से वाद–विवाद को सुलझाने में मदद करती है।

9. **आउटलेट्स :-** इन आउटलेट्स में प्रवासी कंडोम को खरीद सकते हैं। यह आउटलेट्स प्रवासियों की सुविधा को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं, जिसे आसानी से कंडोम प्रवासी खरीद सकते हैं।

10. **DIC :-** संस्थान के पास तीन DIC है, 1. DICऑफिस , 2. DIC चंदेरीया, 3. सावा में है। प्रवासी मजदूर लोग मनोरंजन, आराम, परामर्श, क्लिनिक, जैसी सुविधाएं प्राप्त करते हैं। यह सब सुविधा निशुल्क है। कंडोम खरीदने की सुविधा उपलब्ध है । DIC के लिए कमेटी भी बनी हुई है। जो प्रवासी लोगों को मिलने वाली सुविधाओं की

जानकारी उपलब्ध करवाती है।

11. STI/RTI फॉलोअप:- यदि किसी प्रवासी में STI/RTI के लक्षण पाए जाते हैं तो,उसको डॉक्टरी जांच करवा कर दवाई दी जाती है। उसको फॉलो किया जाता है।

12. **परामर्श :-** परामर्श कर्ता द्वारा 14 प्रकार का परामर्श किया जाता है। प्रवासी के उच्च जोखिम पूर्ण व्यवहार को जानकर,उसमें कमी लाना है। प्रवासी को समझना ही परामर्श कर्ता का मुख्य कार्य है।

13. **निशुल्क स्वास्थ्य जांच :-** निशुल्क स्वास्थ्य जांच के साथ HIV की जांच की जाती है। यदि HIV पॉजिटिव आता है तो,उसको रेफरल किया जाता है। यदि VDRL STI जांच किट मौजूद हो तो,STI लक्षणों की भी जांच फ्री की जाती है।

14. **रजिस्ट्रेशन :-**प्रवासी लोगों का रजिस्ट्रेशन तीन प्रकार के माध्यम से होता है। DIC, परामर्श, कैंप इन सभी सर्विस में से किसी एक के माध्यम से प्रवासियों का नामांकन किया जाता है। प्रत्येक वर्ष 10000 लोगों का रजिस्ट्रेशन करने का टारगेट पूरा करना होता है। जो प्रवासियों चीजों की पूर्ण व्यवहार से सम्मिलित होते हैं उनको ही इस कार्यक्रम से जोड़ना है।

15. **रेफरल व लिंकेज :-** प्रवासी लोगों को आवश्यकता अनुसार उनका DIC, ICTC, ART, DOT सेंटर से लिंक करवाना है।

16. **सरकारी गैर सरकारी :-** प्रवासी लोगों को सरकारी गैर सरकारी सुविधाओं, योजनाओं से जोड़ना है,ताकि वह किसी भी जिले राज्य में रहे सुविधाओं का लाभ ले सकते हैं। इस वर्ष भी अन्य वर्षो की भांति 10000 प्रवासी मजदूर लोगों को HIV के प्रति जागरूक किया गया, और उनका रजिस्टर्ड किया गया। प्रवासी लोग राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पंजाब, झारखंड, हरियाणा, बिहार, गुजरात, उड़ीसा, असम से संबंधित है। अधिकतर प्रवासी लोग इन सभी राज्यों के जिलों, पंचायत, तहसीलों के गांव से हैं। प्रवासी लोग अधिकतर ग्रामीण क्षेत्र से है। प्रवासी लोग एक राज्य से दूसरे राज्य में इधर–उधर पलायन करते रहते हैं।

परियोजना का उद्देश्य है :-

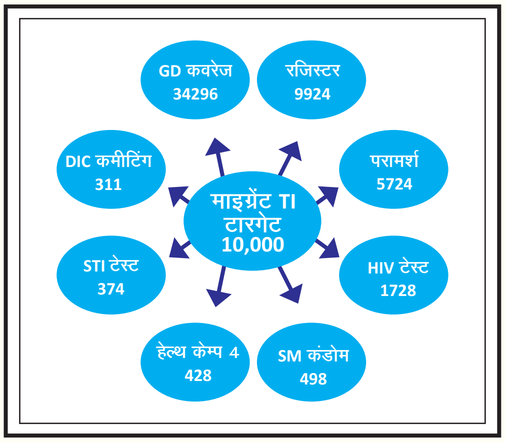

1. DIC में बैठक करना।
2. परामर्श के साथ जांच करना।
3. अधिक से अधिक प्रवासी लोगों को TI से जोड़ना।
4. सरकारी / गैर सरकारी सुविधाओं से जुड़ाव करना।
5. 31 इंडिकेटर का अनुसरण करना।
6. 140000 लोगों से एकल / समूह बैठक करना।
7. HIV/STI पॉजिटिविटी आने पर उनको रेफरिंग करना।
8. प्रवासियों को उनकी सुविधा के लिए TI से जोड़ना।
9. कंडोम उपलब्ध करवाना, व उस का सही उपयोग समझना।
10. प्रवासियों को अन्य राज्यों में जाने पर, सरकारी सुविधाओं से जुड़वाना।
11. 10000 उच्च जोखिम व्यवहार के प्रवासी लोगों का रजिस्ट्रेशन करना।

रणनीति :-

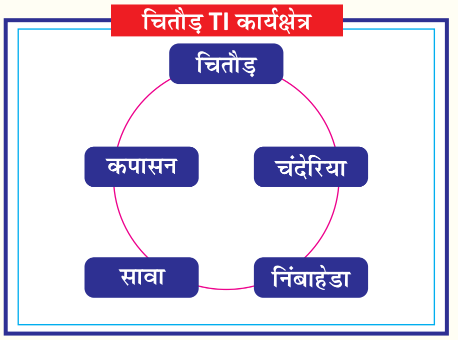

1. छोटी व बड़ी साइट्स को कवरेज करना।
2. अधिकतर प्रवासी लोगों तक पहुंच बनाना।
3. महिलाओं को उनके अनुसार बैठक आयोजित करना।
4. उच्च जोखिम व्यवहार के प्रति लोगों की समझ बनाना।
5. प्रवासियों लोगों को सुरक्षित व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित करना।
6. सभी गतिविधियों में सर्विसेज प्रवासियों के समय अनुसार करवाना।
7. अनुकूल वातावरण बनाकर सर्विसेज प्रवासी तक पहुंचाना।
8. एडवोकेसी क्राइसिस मैनेजमेंट के प्रति जागरूक करना।
9. कंडोम के प्रति जागरूक करना।
10. कंडोम की उपयोगिता समझाना।
11. TI गतिविधियों व सर्विसेज से अधिक संख्या में प्रवासियों लोगों को जोड़ना।
12. मिड–मीडिया से लोगों में HIV/AIDS, STI/RTI, TB, ART सेंटर, इसके प्रति जागरूक करना।

उपलब्धि :-

1. HIV/STI की जांच CBT, VDRL KIT के माध्यम से करना।
2. फैक्ट्री में आसानी से पहुंच बनाना।
3. स्टेक होल्डर,सुपरवाइजर से समय–समय पर सहायता प्राप्त करना।
4. कलेक्टर SDM, रसद विभाग व अन्य विभागो तक पहुंच बनाना।
5. महिला व पुरुषों को ध्यान में रखते हुए सर्विसेज सुविधाओं से जुड़वाना।
6. प्रवासियों को उनके अनुसार TI सुविधा उपलब्ध करवाना।
7. PMO/CM&HO, ICTC प्रभारी,परामर्श कर्ता के साथ नेटवर्क बनाना।
8. एडवोकेसी क्राइसिस के माध्यम से प्रवासी को सर्विसेज की समझ बनाना।
9. प्रवासियों की सुगमता के लिए उनके क्षेत्र में 50 कंडोम आउटलेट्स से जुड़वाना।
10. अधिकतर प्रवासी लोगों को कंडोम की उपयोगिता समझाना।
11. अधिकतर प्रवासी लोगों को कंडोम उपलब्ध करवाना
12. प्रवासियों को अन्य राज्यों में जाने पर, सरकारी सुविधाओं से जुड़वाना।
13. प्रवासियों को अन्य राज्यों में जाने पर आवश्यकता अनुसार मदद करना।
14. प्रवासियों को गैर सरकारी व सरकारी योजनाओं की जानकारी देना,समझ बनाना,सर्विसेज सुविधाओं से जुड़वाना।

द् हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम
The Hans Mobile Medical Services Program 2022-23

द् हंस फाउंडेशन एक प्रमुख गैर–लाभकारी संगठन है जो भारत में समाज की भलाई के लिए विभिन्न सामाजिक और विकासात्मक कार्यक्रमों का संचालन करता है। उसका मुख्य उद्देश्य देश में सबसे वंचित और जरूरतमंद समुदायो को सहायता प्रदान करना है। फाउण्डेशन विभिन्न क्षेत्रो में काम करता है जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, जल स्वच्छता, ग्रामीण विकास और महिलाओ के अधिकारो को बढावा देना। द् हंस फाउंडेशन का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है, और इसके कार्यक्रमो का दायरा भारत के कई हिस्सो में फैला हुआ है। यह फाउण्डेशन विभिन्न परियोजनाओं और पहलो के माध्यम से समुदायो के जीवन में सुधार लाने का प्रयास करता है। द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली के वित्तिय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा हंस मोबाइल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम के तहत श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समीति के 20 गाँवो में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जा रही है। जैसा कि यह सभी को ज्ञात है कि स्वास्थ्य सिर्फ बिमारियों की अनुपस्थिति ही नहीं बल्कि एक पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वस्थता है। इसलिये कहा गया है (पहला सुख निरोगी काया)। स्वस्थ व्यक्ति अपने रोजमर्रा की गतिविधियों से निपटने के लिए किसी भी परिवेश में अनुकूल परिस्थितियों से भी स्वयं को निकालने में सक्षम होते है। कहा भी गया है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। कोई आदमी तभी अपने जीवन का पूरा आनन्द उठा सकता है जब वह शारीरिक तथा मानसिक रुप से स्वस्थ रहे। अगर हम अपने शरीर का ध्यान रखेंगे, संतुलित आहार लेंगें तथा नियमित रूप से व्यायाम करेंगे तो ही स्वस्थ रहेंगें। स्वस्थ रहने के लिये नशे से मुक्ति आवश्यक है। स्वस्थ व्यक्ति ही आनंदमय जीवन व्यतीत कर सकता है।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर ने इन्हीं बातों को ध्यान मे रखते हुए स्वास्थ्य को मुख्य उद्देश्य के रुप मे चुना गया है। ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा समय–समय पर स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दो पर कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है और ज्यादा से ज्यादा लोगों को इन कार्यक्रमों से जोडकर लाभ पहुँचाया जाता है।

कार्यक्रम की शुरुआत :–

संस्थान द्वारा अजमेर जिले के दूर–दराज स्थित गाँवों मे स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं की एक रिर्पोट प्रोजेक्ट रुप में द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली, को सौंपी गई। द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली के मूल्यांकन के द्वारा 13 मई, 2014 को संस्थान द्वारा अजमेर जिले के श्रीनगर पंचायत समीति के 12 गाँवों में इस कार्यक्रम की शुरुआत की गयी । कार्यक्रम के द्वारा एक वित्तीय वर्ष में 12 गाँवो में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की गई हैं। शुरुआत में परियोजना का मूल्यांकन दांता गांव में था लेकिन उसके पश्चात् वर्तमान में बूबानी में स्थित है। जहाँ पर कार्यक्षेत्र से रेफर मरीजों का उपचार भी किया जाता है। यह परियोजना मई 2014 से वर्तमान तक लगातार जारी है और समय–समय पर कार्यक्षेत्र में बदलाव किया जाता है। नये गाँवो को कार्यक्षेत्र में जोडा जाता है और कम से कम 3 साल तक सेवायें प्रदान की जाती है। इन वर्षो में लक्ष्य की प्राप्ति कर नये गाँवो का चुनाव किया जाता है। इस वर्ष (2020 से 2022) तक संस्थान द्वारा अजमेर जिले के श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समीति में 20 गाँवों का चयन किया गया है, जिसमें वर्ष 2020 सें स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाए प्रदान की जा रही हैं।

संस्थान द्वारा हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज प्रोग्राम का संचालन मई 2014 से किया जा रहा है। कार्यक्रम के द्वारा एक वित्तीय वर्ष में 12 गांवों में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जाती है। इन वर्षो में टीम के द्वारा गुवारडी, शाला की ढाणी, कालेडी, आखरी, गुदली, हाथीपट्टा, मानपुरा, नारगाल, लीरी का बाडिया, टण्टिया, मोहनपुरा तथा सराणा आदि 12 गांवों में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की गयीं। माह मैं एक गॉव में दो बार स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस सफलता को देखते हुए इस कार्यक्रम को आगे बढाते हुए वर्ष 2020–21 से 2021–22 तक संस्था ने 20 गाँवों में स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान की जा रही है। एक माह में दो बार तथा प्रत्येक दिन दो गांवों में स्वास्थ्य

शिविरो का आयोजन किया जा रहा है। जिसके अर्न्तगत लाभान्वित होने वाले गांवों की सूची अधोलिखित है – खोडा गणेश, दांता, धामेडी, देवमन्द ढाणी, निम्बुकिया, टिढाणा, नौलखा, भवानीखेडा, मानपुरा, रामपुरा, मोहनपुरा, कानाखेडी, बडल्या, नेडल्या, बडी होकरा, छोटी होकरा, गोवलिया, झोपडा, नाडी का दढ्डा तथा बनियातो की ढाणी।

कार्यक्रम के तहत एक एम्बुलेंस है जो चिकित्सा से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणों से युक्त है। यह एक छोटा चलता–फिरता अस्पताल है। टीम के द्वारा सुबह 9:00 से 4:00 बजे तक 20 गाँवों मे स्वास्थ्य शिविर लगाया जाता है। इसके बाद 4:00 से 5:00 बजे तक बुबानी (स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर) पर मरीजों का उपचार किया जाता है। स्वास्थ्य शिविर मे पूरी टीम उपस्थित रहती है।

कार्यक्रम के उद्देश्य :–

1. द् हंस फाउण्डेशन स्वास्थ्य क्षेत्र में बडे पैमाने पर काम करता है, जिसमें मुफ्त चिकित्सा सुविधाएं, स्वास्थ्य शिविर और उपचार की सुविधाएं प्रदान करना शामिल है। यह ग्रामीण क्षेत्रो में स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच बढानें और चिकित्सा जागरूकता फैलाने के लिए निरंतर काम करता है।

2. शिक्षा को बढावा देने के लिए फाउंडेशन गरीब और वंचित बच्चो के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। इसमें सरकारी स्कूलो के लिए सहायता छात्रवृत्तियां और डिजिटल शिक्षा के कार्यक्रम शामिल हैं, जो बच्चो को बेहतर भविष्य की ओर मार्गदर्शन प्रदान करता है।

3. महिलाओ के सशक्तिकरण के लिए द् हंस फाउण्डेशन विशेष पहल चलाता है, जैसे महिलाओ को स्वरोजगार, आर्थिक स्वतंत्रता और उनके अधिकारो के प्रति जागरूकता बढाना। महिलाओ के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और कानूनी सहायता प्रदान करने पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

4. स्वच्छता और जल स्त्रोतो के संरक्षण के क्षेत्र में द् हंस फाउण्डेशन महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। यह जल संचयन, स्वच्छता अभियान और जल आपूर्ति के लिए काम करता है ताकि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता की स्थिति में सुधार हो सके।

5. ग्रामीण क्षेत्रो में आर्थिक और सामाजिक विकास को बढावा देने के लिए फाउण्डेशन विभिन्न परियोजनाओ पर काम करता है, जैसे ग्रामीण महिलाओ के लिए कसीदाकारी, बुनाई और अन्य हुनर आधारित प्रशिक्षण देना, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हो सके।

6. परिवार में महिलाओं तथा बच्चों की स्वास्थ्य स्थिति में सुधार लाना।

7. परिवार व समाज में महिलाओं की स्वास्थ्य की महत्ता पर जोर देना।

8. महिलाओं तथा बच्चों को स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवायें उपलब्ध करवाना।

9. प्रत्येक गर्भवती व धात्री महिला तक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाओं की पहुँच बनाना।

10. महिलाओं को प्रसव पूर्व सुरक्षित प्रसव तथा प्रसव पश्चात् देखभाल को समझाकर स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करना।

11. महिलाओं को संस्थागत प्रसवों के लिए प्रेरित करना तथा उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे– 104 व 108 सेवाओं, जननी मातृ व शिशु योजना, मुख्यमंत्री राजश्री योजना के लाभों की जानकारी देना।

12. नियमित जाँच, देखभाल, उपचार, संतुलित आहार, टीकाकरण तथा संस्थागत प्रसव आदि के द्वारा मातृ मृत्युदर व शिशु मृत्युदर को कम करना।

13. समुदाय को बालिका बचाने हेतु जागरुक करना।

14. वंचित वर्ग तक स्वास्थ्य व चिकित्सा सुविधाओं को पहुँचाना।

15. पर्यावरण प्रदूषण को कम करने पर जोर देना तथा स्वास्थ्य मे सकारात्मक बदलाव हेतु बनाना।

16. जागरुकता बैठकों का आयोजन कर विभिन्न स्वास्थ्य सम्बंधित मुद्दों जैसे– स्वच्छता, पोषाहार, मानसिक स्वास्थ्य परामर्श, आँखों की देखभाल, स्वच्छ वातावरण, मादक द्रव्यों के सेवन को कम करने हेतु परामर्श तथा विभिन्न बिमारियों जैसे– डेंगु, चिकनगुनिया, मलेरिया, अस्थमा, कैंसर, कुपोषण, मोटापा, एच.आई.वी. /एड्स, एनीमिया, कमजोरी आदि के प्रति जागरुकता लाना।

17. विभिन्न बिमारियों की जाँच व उपचार के साथ–साथ ग्रामवासियों को बिमारियों के कारण, लक्षण, उपचार व रोकथाम के प्रति जागरुक करना।

18. स्वास्थ्य आवश्यकताओं तथा उनके हक के प्रति जागरुक कर उचित कदम उठाने के लिए प्रेरित करना।

19. बालिका जीवितता एवं सुरक्षित मातृत्व से जुडे मुद्दे पोषाहार एवं स्वास्थ्य के बारे मे महिला, परिवार तथा समाज मे जागरुकता को बढावा देना।

20. विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी बैठकों के माध्यम से समय–समय पर देना तथा योजनाओं से उचित लाभार्थियों को जोडकर लाभ पहुँचाना।

21. महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने हेतु जागरुक करना।

22. बेटी बचाओ बेटी पढाओ के लिए ग्रामीण समुदाय के लोगो को प्रेरित करना।

23. जनसंख्या नियंत्रण व स्वास्थ्य की दृष्टि से महिलाओं को बच्चों के बीच कम से कम तीन से पाँच वर्ष का अंतर रखने के लिए प्रेरित करना।

24. ग्रामीणों को कोरोना के बारे में बताना जैसे कि इसके क्या लक्षण हैं, इसके बचाव के उपाय व कैसे इस बीमारी के रहते अपना ध्यान रखा जाना चाहिए।

कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य शिविर में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाएँ

द् हंस फाउण्डेशन द्वारा किए गए प्रयासों से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रो में स्वास्थ्य सेवाओ की गुणवत्ता में सुधार होता है और इलाज की सुविधाएं ज्यादा से ज्यादा लोगो तक पहुंचती है। फाउण्डेशन द्वारा बच्चो को शिक्षा और कौशल प्रदान किए जाने से उनके जीवन मे सकारात्मक बदलाव आता है और वे बेहतर अवसरो के लिए तैयार होते है। महिलाओ को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर प्रदान से वे अपने जीवन में आत्मनिर्भर बनती है और अपने परिवारो की आर्थिक स्थिति को मजबूत करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल प्रशिक्षण और रोजगार अवसरों के माध्यम से फाउंडेशन ग्रामीण समुदायों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाता है और उन्हें आत्मनिर्भर बनाता है। द् हंस फाउण्डेशन अपने कार्यो के माध्यम से समाज में जागरूकता बढाता है, जैसे कि स्वच्छता, जल संरक्षण और महिलाओ के अधिकारो के बारे में। कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य शिविर मे विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाएँ जैसे – चिकित्सा जाँच, दवाइयाँ, काउन्सिलिंग, गर्भवती महिला, स्वास्थ्य जाँच, महिला तथा शिशु

स्वास्थ्य जाँच, देखभाल व घर भ्रमण कर मरीजों का स्वास्थ्य जाँच, रेफर आदि के अलावा स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दो पर जागरुकता बैठको का आयोजन किया जाता है। टीम के द्वारा महिलाओं, किशोर–किशोरी, बालक–बालिकाओं तथा कार्यक्रम के तहत निर्मित ग्राम स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों के साथ जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम के तहत 20 गाँवों में 1–1 स्वास्थ्य कार्यकर्ता को नियुक्त किया गया है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता के द्वारा गांव में भ्रमण किया जाता है। जिसमें उसके कई कार्य होते है। जैसे – गर्भवती तथा धात्री महिला की नियमित देखभाल, टीकाकरण, बच्चों का टीकाकरण, पोषाहार, मरीजों का फोलोअप, टीकाकरण दिवस पर गाँव की आंगनबाडी पर पहुँच तथा टीकाकरण मे सहयोग, गाँव में स्वास्थ्य सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा एवं जागरुकता, परिवार नियोजन के साधनों के प्रति जागरुकता तथा उपयोग पर जोर, मरीजों की रेफर समस्याओं पर चर्चा तथा निवारण विभिन्न बिमारियों की जानकारी, सरकारी योजनाओं की जानकारी देना तथा निवारण, विभिन्न बिमारियों की जानकारी, सरकारी योजनाओं की जानकारी देना तथा सरकारी योजनाओं से जोडकर लाभ पहुँचाना आदि।

स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा समय–समय पर घर भ्रमण कर स्वास्थ्य के बारे में उचित जानकारी प्रदान की जाती है। महिलाओं को उचित मार्गदर्शन भी प्रदान किया जाता है तथा महिलाओं की समय–समय पर घर भ्रमण कर देखभाल की जाती है। कार्यक्रम के बेहतर कार्यान्वन तथा उद्देश्य की सफलतापूर्वक प्राप्ति हेतु प्रत्येक गांव में गांव स्तर पर एक ग्राम स्वास्थ्य कमेटी का गठन किया गया है। गाँव के महिला व पुरुष ही इस कमेटी के सदस्य हैं। गाँव स्तर की समस्याओं पर चर्चा तथा निवारण करने हेतु प्रत्येक माह में एक बार जागरुकता बैठक का आयोजन किया जाता है तथा नवीनतम जानकारी प्रदान की जाती है।

रणनीतियाँ :-

- कार्यक्रम की शुरूआत में गांवों के प्रत्येक घर का सर्वे किया तथा कार्यक्रम की जानकारी दी गयी।
- स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा गाँव में घर–घर जाकर हंस की गाडी के आने की दिनाँक व समय के विषय में सूचना दी।
- एम्बुलेंस का टीम सहित गांव में समय पर पहुँचकर स्वास्थ्य शिविर आयोजित करना।
- धात्री महिलाओं को उनके घर जाकर विजिट कर फॉलोअप करना तथा स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर चर्चा करना।
- स्वास्थ्य शिविर पर आये मरीजों का उचित उपचार तथा आवश्यक सलाह देना।
- महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को एक स्थान पर एकत्रित कर जागरूकता बैठकों का आयोजन करना।
- गांव के उच्च माध्यमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं का एक समूह बनाकर जागरूकता रैली तथा बैठक आयोजित करना।
- गांव स्तर पर निर्मित ग्राम स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों के साथ जागरूकता बैठकों का आयोजन करना।
- जागरूकता बैठकों में विभिन्न मुद्दें जैसे स्वास्थ्य संबंधी मुद्दें, स्वच्छ आदतें, टीकाकरण, विटामिन ए, पोशाहार, स्वच्छता, शारीरिक देखभाल, आँखों की देखभाल, मानसिक स्वास्थ्य, सबस्टेज एब्यूज, संस्थागत प्रसव, प्रसव पूर्व, सुरक्षित प्रसव, प्रसव बाद देखभाल, विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी तथा सामाजिक कुरीतियों जैसेः– दहेज प्रथा, बाल विवाह, शराब, नशाखोरी, अंधविश्वास, भेदभाव आदि पर जागरूकता व काउसेलिंग सेवायें प्रदान करना।

- प्रत्येक माह एक अर्न्तराष्ट्रीय या राष्ट्रीय दिवसों का आयोजन करना।
- गम्भीर गर्भवती महिलाओं को चिन्हित करना एवं बच्चों तथा महिलाओं को नजदीकी अस्पताल पी.एच.सी. या सी.एच.सी. या सब–सेन्टर पर रेफर करना।
- स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा गांव मे होम विजीट कर मरीजों का फॅालोअप करना तथा कार्यक्रम के डॉक्टर के साथ सम्पर्क कर उचित सलाह देना।
- परियोजना अधिकारी द्वारा स्वास्थ्य कार्यकर्ता के साथ गांव मे भ्रमण करना तथा गर्भवती, धात्री महिलाओं तथा गांववासियों से वार्तालाप कर कार्यक्रम की समीक्षा करना तथा मॉनिटरिंग व मूल्यांकन करना तथा टीम को सहयोग प्रदान करना।
- टीकाकरण के दिन आंगनबांडी केन्द्र पर जाना तथा गांव की गर्भवतियों तथा महिलाओं को टीकाकरण के प्रति जागरूक कर टीकाकरण मे सहयोग करना।

गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ:–

नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवायें:– कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधायें अजमेर जिले की श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समिति के 20 गाँवो में प्रदान की जा रही है। कार्यक्रम के तहत मुख्य ध्यान महिलाओं तथा बच्चों पर केन्द्रित किया जाता है। प्रत्येक गाँव में एक स्वास्थ्य कार्यकर्ता नियुक्त किया गया है जो टीम के गांव में पहुँचने से पहले ही सूचना कर देता है। टीम गाँव में पहुँचकर नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन करती है। इसके साथ ही जागरुकता बैठकों का आयोजन भी किया जाता है। एम्बुलेंस टीम के साथ गाँव मे पहुँचकर हॉर्न बजाती है जिससे ग्रामवासियों को सूचना मिल जाती है। स्वास्थ्य टीम द्वारा गृह भ्रमण कर धात्री महिलाओं तथा नवजात शिशु की स्वास्थ्य जाँच, देखभाल, स्तनपान का तरीका व टीकाकरण हेतु प्रेरित, टाँको की देखभाल, जन्म प्रमाणपत्र, स्वच्छता, उपचार आदि सेवायें प्रदान की जाती है। परियोजना के तहत इस वर्ष 24448 मरिजों को नि:शुल्क स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवायें प्रदान की गई।

वर्ष	महिला	पुरुष	बच्चे	कुल
2014–15	9148	5789	2443	17380
2015–16	12563	1817	4182	18562
2016–17	11543	2119	3853	17575
2017–18	11879	1259	3593	16736
2018–19	11823	1338	3681	16842
2019–20	10912	3144	1793	15849
2020–21	15884	1495	5146	22525
2021–22	17412	1579	5457	24448
2022–23	18411	1680	5500	25591

स्वास्थ्य शिविर में महिलाओं और बच्चों से सम्बन्धित सभी प्रकार की बिमारियों का उपचार किया जाता है। कई बार उपचार से आराम नहीं मिलने पर या गंभीर परिस्थितियाँ होने पर जाँच हेतु मरिजों को किशनगढ, श्रीनगर तथा अजमेर के अस्पतालों में रेफर भी किया जाता है।

कार्यक्रम का स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर–बूबानी में स्थित है जहाँ से कार्यक्रम का संचालन किया जाता है। बूबानी से प्रातः 9:00 बजे एम्बुलेंस गाँव में स्वास्थ्य शिविर लगाने के लिये रवाना होती है। 09:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक गाँवों में स्वास्थ्य शिविर लगाया जाता है। शाम 4:00 बजे तक बूबानी में स्वास्थ्य टीम पहुँचती है और 5:00 बजे तक स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर, बूबानी पर स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जाती है।

टीम के द्वारा प्रत्येक मरीज का पूरा रिकॉर्ड ओ.पी.डी. रजिस्टर में रखा जाता हैं उसी रिकॉर्ड के आधार पर मासिक रिर्पोट बनाई जाती है। उनकी प्रत्येक विजिट में वजन, बी.पी. जाँच, सोनोग्राफी आदि की जाँच की जाती है। प्रत्येक विजिट में संस्थागत प्रसव के लिए प्रेरित किया जाता है। 104 व 108 की सुविधाओं की सम्पूर्ण जानकारी दी जाती है। बच्चा होने पर टीम द्वारा धात्री महिला के घर जाकर पीएनसी विजिट की जाती है। महिला को स्वयं तथा अपने बच्चे की देखभाल प्रक्रिया तथा सावधानियों के प्रति जागरुक किया जाता है। बच्चे को नहलाना, मालिश करना, स्तनपान से लेकर सम्पूर्ण टीकाकरण करवाने लगवाने के लिये प्रेरित किया जाता है। माँ को स्वयं के आहार के प्रति जागरुक भी किया जाता है।

परियोजना के स्वास्थ्य शिविर में डॉक्टर द्वारा मरिजों की स्वास्थ्य जाँच कर उपचार लिखा जाता है। मेल–नर्स तथा नर्स द्वारा दवा दी जाती है और दवा खाने का तरीका भी बताया जाता है। मरिजों की बीमारी के अनुसार ही दवा दी जाती है और उपचार चलाने के लिए जागरुक किया जाता है। मरिजों को 3–15 दिन का उपचार दिया जाता है। बी.पी. अस्थमा, जैसी बिमारियों का ईलाज लगातार चलता है। उन्हें 15 दिन का उपचार दिया जाता है। परियोजना टीम द्वारा लगातार गाँव में भ्रमण कर ग्रामवासियों से सम्पर्क किया जाता है। गाँव में महिलायें गर्भवती होने पर टीम के पास जाँच हेतु आती है और पॉजीटिव होने पर लगातार उपचार दिलवाया जाता है। उनके वजन, बी.पी. दैनिक दिनचर्या, कामकाज, खून की जाँच, दिन के समय आराम, टीकाकरण, सोनोग्राफी, स्वयं की पहचान सम्बन्धित दस्तावेजो का कार्य पूर्ण तथा आंगनबाडी केन्द्र पर लगातार सम्पर्क आदि की पूर्ण जानकारी दी जाती है तथा टीम द्वारा रिकॉर्ड भी रखा जाता है। गर्भवती महिलायें स्वास्थ्य शिविर में पहुँचकर नियमित जाँचों का मूल्यांकन तथा दवाइयाँ प्राप्त करती है। इसके साथ सरकारी संस्थानों पर लगातार सम्पर्क बनाये रखने के लिए प्रेरित भी किया जाता है। गर्भवती महिलायें पूर्ण गर्भावस्था के दौरान टीम से जुडी रहती है और उपचार प्राप्त करती है।

गर्भवती एवं धात्री महिला जाँचः– कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य सुविधायें प्रदान करना है। विशेषतः प्रत्येक गर्भवती महिला को स्वास्थ्य लाभ पहुँचाना है। हमारा लक्ष्य मातृ मृत्युदर को कम करना है इसलिये टीम गर्भवती तथा धात्री महिलाओं पर विशेष ध्यान केन्द्रित करती है। टीम वर्तमान के श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन क्षेत्र के 20 गाँवों में कार्य कर रही है। प्रत्येक गाँववासी को कार्यक्रम की सुविधाओं की जानकारी है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता की भी गाँव में अच्छी पहचान बन चुकी है। गाँव में अगर किसी महिला को कोई तकलीफ होती है तो वह स्वास्थ्य कार्यकर्ता से तुरंत सम्पर्क करती है। महिला को गर्भ से होने का अंदेषा होने पर स्वास्थ्य टीम या आंगनबाडी केन्द्र पर जाँच करवाकर पुष्टि कर लेती है। गर्भवती महिला के प्रथम बार स्वास्थ्य शिविर में पहुँचने पर उसका रजिस्ट्रेशन किया जाता है उसके बाद लगातार शिविर में पहुँचकर स्वास्थ्य जाँच करवाने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके साथ ही स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा स्वास्थ्य शिविर के बाद लगातार गृह भ्रमण कर स्वास्थ्य स्थिति की जानकारी प्राप्त की जाती है। इसके साथ उनकी काउंसिलिंग की जाती है, जिसमें पोशाहार, स्वच्छता, दैनिक दिनचर्या, आराम, जननी सुरक्षा योजना तथा खून की जाँच आदि के लिए प्रेरित किया जाता है और उनसे संस्थागत प्रसव, टीकाकरण माँ का पहला दूध आदि बिन्दुओं पर भी चर्चा की जाती है। परियोजना के द्वारा इस वर्ष में 422 गर्भवती महिलाओं का पंजीकरण कर स्वास्थ्य सुविधायें प्रदान की गयी। इन पंजीकृत गर्भवती

महिलाओं को बच्चा होने तक स्वास्थ्य जाँच एवं उपचार की सुविधा प्रदान की गयी। टीम द्वारा इन 422 पंजीकृत गर्भवती महिलाओं को 3336 बार स्वास्थ्य जाँच एवं उपचार दिया गया। प्रत्येक विजीट पर उन्हें लगातार वजन बढाने, पोषाहार, स्वच्छता, आराम, संस्थागत प्रसव तथा माँ का पहला दूध पिलाने के लिए जागरुक किया जाता है। साथ ही बेटा–बेटी मे अंतर न करके बेटी को भी समान अवसर प्रदान करने के लिए प्रेरित किया जाता है। बेटी को भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देना चाहिये। उसे ही बेटा समझना चाहिए। प्रसव होने पर टीम द्वारा महिला के घर मातृ एवं शिशु देखभाल हेतु भ्रमण किया जाता है। बच्चे एवं माँ को बच्चे के सम्पूर्ण टीकाकरण, स्तनपान, स्वच्छता, पोशाहार, जन्म प्रमाण पत्र के साथ विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जाती है। इस वर्ष में टीम द्वारा 311 धात्री महिलाओं का उपचार, परामर्श एवं स्वास्थ्य देखभाल की गयी।

टीकाकरण:– स्वास्थ्य टीम गाँव में स्वास्थ्य सेवायें तथा चिकित्सा सेवायें प्रदान करती है। सम्पूर्ण टीकाकरण बच्चों के बेहतर तथा सुरक्षित भविष्य के लिये आवश्यक है। यह टीकाकरण बच्चों को सात बिमारियाँ जैसे – क्षय रोग, डिष्थीरिया, काली खाँसी, खसरा, टिटनेस, हेपेटाईटिस बी तथा चिकन पॉक्स आदि से बचाते है। इसके साथ ही बच्चो को पोलियो की दवा भी पिलाई जाती है। आंगनबाडी केन्द्र पर कार्यरत आशा सहयोगिनी तथा टीम का स्वास्थ्य कार्यकर्ता टीकाकरण से पूर्व गाँववासियों को सूचना प्रदान करता है। टीकाकरण के दिन आंगनबाडी केन्द्र पर टीकाकरण में सहयोग किया जाता है। टीकाकरण के दिन गर्भवती महिलाओं तथा बच्चों को टीके लगाये जाते है। जिसका रिकॉर्ड स्वास्थ्य कार्यकर्ता तथा आंगनबाडी कार्यकर्ता द्वारा रखा जाता है। इस वर्ष में 20 गाँवों में टीम के सहयोग से आंगनबाडी केन्द्रों पर टीकाकरण किया गया। जिसकी रिर्पोट है – 215 बी.सी.जी., 283 पेन्टा प्रथम, 297 पेन्टा द्वित्तीय, 342 पेन्टा तृतीय, 342 आईपीवी, 318 खसरा, 181 डीपीटी बुस्टर प्रथम, 12 डीपीटी बुस्टर द्वित्तीय तथा गर्भवती को 408 टीटी लगाये गये। टीम द्वारा प्रत्येक गाँव से प्रत्येक माह में रिकॉर्ड प्राप्त किये जाते है और मासिक रिकॉर्ड में दर्ज कर संस्थान तथा टी.एच.एफ. को प्रदान किये जाते है।

टीम द्वारा उन महिलाओं के घर भ्रमण कर टीकाकरण के लिए प्रेरित किया जाता है जो टीके नहीं लगवाते हैं, उन्हें टीकाकरण हेतु प्रेरित कर टीकाकरण करवाया जाता है। टीम द्वारा नवम्बर माह में विश्व टीकाकरण दिवस भी मनाया जाता है। इस दिवस पर जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। इन बैठकों के माध्यम से ग्रामवासियों को सम्पूर्ण टीकाकरण करवाने हेतु काउन्सलिंग की जाती है। टीम के सहयोग से इस वर्ष मे कुल 2398 बच्चों का टीकाकरण करवाया गया। बच्चो तथा गर्भवती महिलाओ के टीकाकरण के साथ–साथ कोरोना का टीका लगवाने के लिए भी गाँववासियों को प्रेरित किया जाता है। उनकी भ्रान्तियों को दूर कर उन्हें टीकाकरण करवाने के लिए जागरुक किया जाता है।

मातृ मृत्युदर एवं शिशु मृत्युदर:– कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गर्भवती महिलाओं को जागरुक कर नियमित जाँच तथा उपचार के माध्यम से संस्थागत प्रसव के फायदे बताना है। कार्यक्रम के विभिन्न आयाम हैं जिसका उद्देश्य ग्रामवासियों को उनके उद्देश्य के प्रति जागरुक करना है। विशेषतः महिला स्वास्थ्य का मुद्दा है। टीम द्वारा जागरुकता बैठकों के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। महिलाओं को वर्तमान के परिपेक्ष में छोटा परिवार–सुखी परिवार के लिए प्रेरित किया जाता है। गर्भावस्था के दौरान पोषाहार, दैनिक दिनचर्या, दिन के समय आराम, नियमित जाँच, वजन, बी.पी., खून की जाँच, टीकाकरण, सोनोग्राफी के साथ–साथ लगातार उपचार की सलाह दी गयी ताकि मातृ मृत्युदर को कम किया जा सके। शिशु मृत्युदर को कम करने के लिए जागरुकता बैठकों में स्तनपान का तरीका, स्वच्छता, माँ का पहला दूध आदि के प्रति गर्भावस्था में जागरुक किया जाता है तथा उसके बाद पी.एन.सी. विजीट पर भी प्रेरित किया जाता है ताकि शिशु मृत्युदर को कम किया जा सके। टीम द्वारा 20 गाँवों मे स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाता है। वर्षभर में कार्यक्षेत्र के 20 गाँवों में एक भी मातृ मृत्यु नही हुई। वर्ष भर में 311 बच्चों का जन्म हुआ जिसमें से 8 बच्चों की मृत्यु हुई है। जो पिछले वर्ष की मृत्युदर से काफी कम है। टीम द्वारा समय–समय पर विभिन्न मुद्दों पर जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है।

संस्थागत प्रसव:– कार्यक्रम का उद्देश्य ही गर्भवती महिलाओं का नियमित उपचार कर संस्थागत प्रसव करवाना है। जागरुकता बैठकों के आयोजन के द्वारा महिलाओं को संस्थागत प्रसव, जननी सुरक्षा योजना, 104 व 108 की सुविधाओं आदि के साथ–साथ माँ व बच्चे की सुरक्षा तथा उपयोगिता के प्रति सचेत किया। स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा सरकारी अस्पताल में प्रसव करवाने के बाद मिलने वाले लाभ की जानकारी गृह परिवारों को दी गयी। महिला के साथ–साथ उनके परिवारों को भी संस्थागत प्रसव हेतु प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम के द्वारा 20 गांवों में इस वर्ष 274 प्रसव सरकारी अस्पताल में, 31 प्रसव निजी अस्पताल मे तथा 6 प्रसव घर पर हुये। इस वर्ष भर में कुल 311 प्रसव हुये।

जागरुकता:– कार्यक्रम में स्वास्थ्य शिविर तथा जागरुकता बैठकों का नियमित रुप से आयोजन किया जाता है। टीम के द्वारा महिलाओं, किशोर–किशोरी, बालक–बालिकाओं तथा ग्राम स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों के साथ जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। इन जागरुकता बैठकों में स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों तथा बिमारियों पर चर्चा की जाती है और जागरुक किया जाता है। इसके साथ ही माह में एक बार एक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दिवस भी मनाया जाता है। इस तरह वर्ष भर में 18 राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दिवसों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष टीम द्वारा महिलाओं की 20 जागरुकता बैठकों का आयोजन किया गया। जिसमे 4688 महिलाओं को जागरुक किया गया। किशोर–किशोरी के साथ 16 जागरुकता बैठकों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के पिछले वर्ष तक किशोरी जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता था लेकिन इस वर्ष से किशोर–किशोरी जागरुकता बैठकों का आयोजन किया गया। इन जागरुकता बैठकों मे किशोर–किशोरी के स्वास्थ्य स्थिति, शारीरिक बदलाव, देखभाल व सावधानियाँ आदि पर भी चर्चा की गयी तथा छेडछाड के प्रति सचेत किया गया। कार्यक्रम में ग्रामवासियों का उच्चतर सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रत्येक गाँव में ग्राम स्तर पर एक ग्राम स्वास्थ्य कमेटी का गठन किया गया है। इनके साथ भी माह मे एक बार जागरुकता बैठक का आयोजन कर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। ग्राम स्वास्थ्य कमेटी की 20 जागरुकता बैठकों के द्वारा 2693 सदस्यों को जागरुक किया गया। समय–समय पर जागरुकता बैठकों के साथ–साथ रैलियों का आयोजन भी किया जाता है।

परिवार नियोजन:– कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं के अलावा जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन जागरुकता कार्यक्रमों में स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। टीम के द्वारा परिवार नियोजन की भी जागरुकता बैठकों में चर्चा की जाती है। महिलाओं तथा उनके परिवार को छोटे परिवार का महत्व समझाया जाता है। आजकल के महंगाई के जमाने में बच्चों को उच्चतर शिक्षा, सक्षम बनाना तथा सशक्त करना बहुत मुश्किल है। बिना किसी कामयाबी के आने वाले समय में जीवन जीना और भी मुश्किल हो जायेगा। जमीने कम पड जायेगी। खाने–पीने की चीजें कम पडेगी। इन बिन्दुओं पर चर्चा कर परिवार नियोजन के साधन जैसे–कण्डोम, गर्भ निरोधक गोलियाँ, महिला नसबंदी, पुरुष नसबंदी, कोपरटी, इंजेक्शन, इत्यादि की विस्तृत जानकारी दी गई तथा उपयोग में लेने के लिए प्रेरित किया गया।

टीम के द्वारा स्वयं परिवार नियोजन के साधनों को महिलाओं को नहीं दिया जाता है बल्कि स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा महिलाओं को प्रोत्साहित कर आंगनबाडी केन्द्र तक पहुँचाने और वहाँ पर आशा सहयोगिनी की देखरेख में महिलाओं को उचित साधन दिया जाता है तथा जागरुक भी किया जाता है। इसके साथ ही नसबंदी के लिए भी प्रेरित किया जाता है। टीम के द्वारा आशा सहयोगिनी के सहयोग से 53 महिला नसबंदी करवाई गई। 27 महिलाओं ने कॉपरटी रखवायी। 2314 महिलाओं ने कंडोम किया। 418 महिलाओं ने गर्भ निरोधक गोलियाँ तथा 57 महिलाओं ने सरकार द्वारा संचालित अंतरा इंजेक्शन लगवाये। इस प्रकार 2869 परिवार नियोजन साधनों का उपयोग इस वर्ष में किया गया।

रेफरल सेवायें:– कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य शिविर में स्वास्थ्य सेवाएँ निःशुल्क प्रदान की जाती है। स्वास्थ्य शिविर में सामान्यतः बिमारियों का ईलाज किया जाता है। कई बार स्वास्थ्य सेवाओं का फायदा न होने पर, गंभीर समस्या

होने पर तथा लैब जाँच हेतु मरिजों को सरकारी व गैर सरकारी अस्पतालों में रेफर किया जाता है।

जाँच करवाकर पुनः स्वास्थ्य शिविर में चेकअप हेतु आने के लिए प्रेरित किया जाता है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा घर भ्रमण कर स्वास्थ्य जानकारी प्राप्त की जाती है। इस वर्ष टीम के द्वारा 194 मरिजों को रेफरल सुविधायें प्रदान की गई। आस–पास के कार्यक्षेत्र में गर्भवती महिला की स्वास्थ्य स्थिति अचानक खराब होने पर उसे इस एम्बुलेंस के द्वारा सरकारी अस्पताल में भी पहुचायाँ जाता है।

स्वास्थ्य सेवाऐं

- गर्भवती व धात्री महिला जाँच
- मातृ मृत्युदर को कम करना
- शिशु मृत्युदर को कम करना
- सम्पूर्ण टीकाकरण
- संस्थागत प्रसव के लिए प्रेरित करना
- परिवार नियोजन को बढ़ावा देना
- जागरूकता फेलाना

टी.एच.एफ. विजीटः– कार्यक्रम का संचालन द् हंस फाउण्डेशन नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रम का संचालन अजमेर जिले की श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समिति के 20 गांवों में किया जा रहा है। हर वर्ष द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली के द्वारा कार्यक्रम की गतिविधियों का मूल्यांकन किया जाता है। परन्तु कोरोना महामारी के कारण इस वर्ष विजीटकर्ता द्वारा टी.एच.एफ. विजीट ऑन लाइन ही की गई। परियोजना निदेशक शंकरसिंह रावत और परियोजना समन्वयक प्रीति ईनाणी द्वारा संस्थान की गतिविधियों व कार्यक्रम की सम्पूर्ण गतिविधियों की विस्तृत जानकारी ऑन लाइन प्रदान की गयी और कार्यक्रम संचालन की रूप रेखा को समझाया गया।

निष्कर्षः–

द् हंस फाउण्डेशन का उद्देश्य भारत में सामाजिक और आर्थिक विकास को बढावा देना है, खासकर उन समुदायो के लिए जो सबसे ज्यादा वंचित और जरूरतमंद है। यह फाउण्डेशन शिक्षा, स्वास्थ्य, जल, स्वच्छता और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसके द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमो से न केवल व्यक्ति के जीवन में सुधार होता है, बल्कि समुदायो को भी समग्र रूप से सशक्त किया जाता है।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान, अजमेर जिले की एक प्रमुख गैर सरकारी संगठन है जो समाज सेवा के क्षेत्र में सक्रिय है। यह संगठन समाज के पिछडे वर्गो, खासकर ग्रामीण इलाको में काम करते है और उनकी सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति में सुधार लाने के लिए विभिन्न परियोजनाएं संचालित करता है।

केस स्टडी

व्यक्तिगत जानकारी– अमरी देवी पत्नी श्री ब्रम्मा सिंह जो कि 52 वर्ष की है और घर के कार्यो तथा खेती का काम करती है। उनकी जाति रावत है जो OBC में आते है। वह हाथीपट्टा गॉव की रहने वाली है। तथा बॉइल (Boil) बीमारी से परेशान है।

पृष्ठ भूमि– अमरी देवी 52 वर्ष की हाथीपट्टा गॉव में रहने वाली महिला है। संस्थान स्वयं सहायता समूह का संचालन करती है जिसमें SHGs को बैंक से जोडकर लोन दिलवाया जाता है। वे लोन को आजिविका की गतिविधियों में काम में लेती है। कुछ महिलाओ ने भैंसे, गाय व बकरीयॉ भी खरीदी है। कुछ महिलाये अपनी दुकान के लिए माल खरीदती है। कुछ महिलाओ के पास ग्रोसरी की दुकाने है। संस्थान ने SHG महिलाओ के लिए सिलाई प्रशिक्षण व रात्रि पाठशाला चलाई है। इनके गॉवो में यह प्रथा चलती आ रही है कि महिलाये बाइक पर नही बैठ सकती है। बहुऍ गॉवों में यातायात के लिए साधन उपयोग में नही लेती है। वे दूध नही बेचती है, वे घी बेचती है। इस प्रथा पर संस्थान पार्टनर एजेन्सी के साथ काम कर रही है। जिसमें अप्रेल 2017 में GMVS ने हाथीपट्टा गॉव में HMMS प्रोजेक्ट का संचालन करना प्रारम्भ किया। प्रोजेक्ट हेल्थ चेकअप, दवाईयॉ वितरण तथा जागरूकता बैठक कर रही है।

अमरी देवी जो कि ब्रम्मा सिंह जी की पत्नी है, उनके 4 बच्चे है। उनके बडे बेटे जय सिंह की पत्नी ज्ञाना है। आरती, आशिष, दिव्या और समराट जय सिंह जी के बच्चे है। हंगाम जयसिंह जी से छोटे है तथा बीरी देवी उनकी पत्नी है। रोहित, करण और अर्जुन हंगाम सिंह जी के बच्चे है। विजय सिंह, हंगाम सिंह जी से छोटे है तथा रेखा देवी विजय सिंह जी की पत्नी है। सोहन सिंह अमरी जी के सबसे छोटे बेटे है। वह शादि शुधा नही है। उनके बडे बच्चे अलग है। वह विजय सिंह व रेखा देवी के साथ रह रहे है। सोहन सिंह उनके साथ रह रहे है। विजय सिंह प्राइवेट स्कूल में शिक्षक है और सोहन सिंह B.A. कर रहे है। रेखा देवी भी शिक्षित है। वह भी शिक्षिका थी पर अब नही है। अब वह घर पर काम कर रही है और अपनी बहु की खेती में मदद कर रही है।

अमरी देवी के पास 15 बीघा जमीन है और एक कुआं उनके खेत में है। वह घर पर काम करती है और उसके बाद खेतो मे काम करती है। उनके पास दो भैंस व एक बकरी है जिसको वह खेतो से खिलाती है। पूरा दिन खेतो में काम करती है और ब्रम्मा सिंह जी भी खेती में मदद करते है।

कार्यक्रम से जुडावः– स्वास्थ्य कार्यकर्ता सर्वे के लिए घर–2 जाते है। परिवार की सूचना सर्वे के समय पर मिली और कार्यक्रम की सूचना गॉव वालो को दी गई। कार्यकर्ता अमरी देवी जी से घर विजिट के दौरान मिले। स्वास्थ्य कार्यकर्ता उनके घर पर लगातार विजिट करते रहे और प्रोग्राम तथा स्वास्थ्य केम्प की सूचना देते रहे। अमरी देवी ने अगस्त माह के पहले स्वास्थ्य केम्प में कमजोरी का इलाज करवाया। स्वास्थ्य कार्यकर्ता और टीम की मदद से उन्होने 2 महिने लगातार इलाज प्राप्त किया। उन्होने राष्ट्रीय पोषण सप्ताह जागरूकता मिटिंग में भाग लिया। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने नवम्बर माह के दूसरे स्वास्थ्य केम्प से 3 दिन पहले विजिट की। अमरी देवी ने कहॉ की उनके पैर पर एक छोटा सा बॉइल (फोडा) है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने उन्हें सुझाव दिया कि वह बुबानी हेल्थ सेन्टर और श्रीनगर के किसी भी अस्पताल में विजिट कर सकते है। उन्हे कहीं भी जाने की जरूरत ही है। वह घरेलू उपाय भी कर सकती है जैसे नीम व हल्दी का उपयोग कर रोजमरा के कार्य कर सकती है। उनका फोडा बड गया और उसमें गन्दगी के कारण पस भर गई। 27 नवम्बर की सुबह को उनको दर्द शुरू हो गया। उन्होनें श्रीनगर में विजिट की और क्लिनिक से इलाज प्राप्त किया। उसी दिन स्वास्थ्य केम्प भी था।

जॉच व इलाजः– स्वास्थ्य केम्प के दिन प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर और स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने उनके घर पर विजिट की और अमरी देवी से मिले। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने अमरी देवी की समस्या के बारे में बताया। प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर ने उनकी हेल्थ के बारे में बताया। उन्होने कहॉ कि मैं आज सुबह श्रीनगर विजिट करने गई। डॉक्टर ने मुझे इंजेंक्शन लगाया तथा कल बुलाया, उन्होने मुझे दवाईयां नही दी। टीम ने उन्हें समय पर स्वास्थ्य केम्प पर आने तथा सही व पूरा कोर्स करने के लिए प्रेरित किया।

अमरी देवी ने स्वास्थ्य केम्प पर विजिट किया तथा डॉक्टर अब्दुल मलिक से मिले। उन्होने शुरूवात से अन्त तक बताया। अब तुम्हारी टीम घरों में विजिट करके प्रेरित कर रही है कि ड्रेसिंग व दवाईयों के लिए स्वास्थ्य केम्प पर

आये। डॉक्टर ने उन्हे देखा और इलाज किया। नर्स कंचन पारिक ने उनके पैर को देखा और उसे साफ कर ड्रेसिंग की। नर्स ने उन्हे धूल–मिट्टी से दूर रहने के लिए कहा और कहॉ कि परसो ड्रेसिंग के लिए बुबानी सेन्टर या श्रीनगर हॉस्पिटल आ जाये। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने 4 को उनके घर पर विजिट की और उनके स्वास्थ्य की सूचना ली। उन्होने कहा कि वह ड्रेसिंग तथा दवाईयों के लिए श्रीनगर विजिट करेगी। कल में दांता गॉव मेरे मायके जाउॅगी और फिर में बुबानी हेल्थ सेन्टर से इलाज लूंगी। मैं शाम को विजिट करूंगी। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने उन्हे आगे का इलाज समय पर लेने की सलाह दी।

अमरी देवी ने बुबानी हेल्थ सेन्टर 2 दिसम्बर को विजिट किया। वह 3 बजे आयी। उन्होने कुछ समय के लिए इन्तजार किया। टीम 4 बजे पहुंची और अमरी देवी से मिली। उन्होने डॉक्टर से कहा कि मैं पूरा इलाज करवाउॅगी जो आपने हाथीपट्टा गॉव में दिया। मैं ड्रेसिंग के लिए 3 बार श्रीनगर गया। उन्होने ड्रेसिंग खोली और अपने घाव को दिखाया। नर्स ने उन्हे दवाईयॉ दी जो डॉक्टर ने बताई। नर्स ने कहॉ की अब इस पर ड्रेसिंग की जरूरत नही है। तुम इसे हवा में रखों और ध्यान रखो की इस पर धूल ना लगे। मिट्टी और धूल से दूर रहो और दवाईयॉ लो यह तुम्हे पूरा आराम देगा।

दिसम्बर माह की पहली विजिट पर अमरी देवी को स्वास्थ्य कार्यकर्ता के द्वारा स्वास्थ्य केम्प की सूचना मिली। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने उनके स्वास्थ्य की जानकारी उन्हे दी। उन्होने कहॉ कि वह पूरी तरह से ठिक है। यहॉ पर एक छोटा सा निशान रह गया है, बाकि सब ठिक है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने सुझाव दिया कि नारियल तेल का उपयोग करे।

निष्कर्षः– दिसम्बर माह की पहली विजिट में अमरी देवी टीम के लिए चाय लेकर आई। उन्होने टीम को चाय सर्व कि और सभी को धन्यवाद दिया। उन्होने कहा कि वह अब पूरी तरह से ठीक है अगर आपकी टीम यहॉ नही होती तो उन्हे रोज इंजेक्शन के लिए जाना पडता और घर से भी किसी को साथ ले जाना पडता। यह हमारे वक्त को खराब करता और हमारे काम में भी धिक्कत आती। अब मेने खुद का इलाज करवाया है और में ठीक हुं। उन्होने अपने शब्दो में कहॉ कि माने ट्यूब घनी चौखी लागी और मुस्कुराते हुए धन्यवाद किया।

नेशनल ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम, उभर–जयपुर (राज.)

National Truckers Eye Health Project, Uber-Jaipur (Rajasthan) 2022-23

साईट सेवर्स व रेबन के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा संचालित राष्ट्रीय ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम के तहत मई 2022 से सभी ट्रक ड्राईवरो व क्लिनर की निःशुल्क ऑखो की जॉच व चश्मे वितरण किये जा रहे है। साथ ही जयपुर में मई 2022 से मार्च 2023 तक 30 नेत्र जॉच शिविर आयोजन किया गया है।

जिसमें ऑखो की जॉच के साथ ही ब्लड शुगर, रक्तचाप, वजन ऊँचाई का मापन आदि मापने के कार्य किये जाते है। फिर उन्हें विजन टेक्निशियन के पास ऑखों कि स्क्रिनिंग के लिए भेजा जाता है। वहॉ से उन्हे अलग–अलग ग्रेड मिलती है। जिस आधार पर ऑपटोमेट्रिस्ट उनकी ऑखो की जॉच करता है। यदि उन्हें चश्में की आवश्यकता होती है तो ही वह उन्हें चश्मा वितरण के लिए कहता है।

साथ ही टीम द्वारा सभी ड्राईवरों को स्वास्थ्य शिक्षा व आर्थिक स्थिति के बारे में विस्तार से समझाया जाता है। सभी ट्रक ड्राईवरो को यह भी बताया जाता है कि प्रत्येक 6 माह से अपनी ऑखो की जॉच करवाना अनिवार्य है। उन्हें पोष्टिक आहार व ऑखों की सही देखभाल के लिए प्रेरित किया जाता है।

01.05.2022 से 31.03.2023 तक का कार्यक्रम लक्ष्य इस प्रकार है।

कुल OPD	कुल चश्में
1950	780

भारत में 5 मिलियन ट्रक चालक कार्यरत है, जिनमें से 2.5 मिलियन ट्रक 3.3 मिलियन किलोमीटर की सडको के विशाल नेटवर्क पर राष्ट्रीय माल का 65 प्रतिशत परिवहन करते है। लगभग आधें ट्रक चालक लंबें मार्गो पर चलते है, जहॉ समय के साथ सडक दुर्घटनायें एक परेशान करने वाली आवृत्ति बन गई है।

साइटसेवर्स के पिछले ट्रकर कार्यक्रम हस्तक्षेप से प्राप्त अनुभव से पता चला कि ट्रक, बस, ऑटोमोबाईल चालको में संभावित रूप से दृष्टि क्षीण करने वाली नेत्र स्थितियॉ मोजूद है, जबकि इस आबादी को उच्च लागत और नेत्र स्वास्थ्य के प्रमुख पहलुओं के बारे में अज्ञानता के कारण पर्याप्त नेत्र देखभाल सेवाएँ नही मिलती है। इन निष्कर्षो की पुष्टि भारत और विदेश के साहित्य की समीक्षा से होती है। जो सुरक्षित ड्राइविंग और दृश्य कार्यो के बीच एक मजबूत संबंध और नेत्र स्वास्थ्य सेवाओ तक न्यूनतम पहॅुच की ओर इशारा करते है।

यह उन्हे हस्तक्षेप के लिए एक उच्च प्राथमिकता वाला समूह बनाता है।

पृष्ट भूमि और परियोजना विवरण–

वर्तमान ट्रकर्स कार्यक्रम की परिकल्पना इस तरह से कि गई है कि इसे सबसे अधिक लागत प्रभावी तरिके से अधिकतम लाभार्थियों तक पहुँचाया जा सके, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि ऐसी प्राथमिक नेत्र देखभाल सेवाएँ न केवल गुणवत्ता में अच्छी हो बल्कि लक्षित समुदायो के लिए आसानी से सुलभ स्थानो पर भी हों। इस दर्शन को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम के लिए भोगोलिक मानचित्रण स्वर्णिम चतुर्भुज के इर्द गिर्द घूमने के लिए तैयार किया गया है, जो भारत के चार शीर्ष महानगरीय शहरो को जोडने वाले राजमार्गो का एक नेटवर्क है, अर्थात् उत्तर में दिल्ली, पश्चिम में मुंबई और दक्षिण में चैन्नई और पूर्व में कोलकाता प्रमुख पडाव बिन्दू, गोदाम, ट्रांस–शिपमेन्ट स्थान, परिवहन नगर, बंदरगाह और उद्योग,यार्ड आदि सभी इन लाइनो के साथ स्थित है, जिससे ट्रकर्स समुदाय को अपने काम की प्रकृति के आधार पर ऐसे स्थानो पर यात्रा करने और आने जाने की आवश्यकता होती है और साथ ही संक्रमण के बीच बडी संख्या में एकत्र होती है।

उपरोक्त जानकारी के आधार पर कार्यक्रम के वर्तमान चरण के उद्देश्य इस प्रकार है–

- ❖ स्क्रीनिंग और अपवर्तन के माध्यम से जरूरतमंद ट्रक चालको को प्राथमिक नेत्र देखभाल सेवाएं प्रदान करना।
- ❖ लक्षित समुदाय के बीच नेत्र स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करना।
- ❖ जरूरत मंद ट्रक चालको को चश्मा वितरित करना।
- ❖ आगे निदान और उपचार की आवश्यकता वाले मामलो की पहचान करना तथा स्थानीय बेस अस्पताल में आवश्यक रेफरल करना।
- ❖ प्रोद्योगिकि के उपयोग के माध्यम से सभी ट्रक चालको का डेटा व्यापक रूप से एकत्रित करना।

ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम - निम्बाहेड़ा-चित्तौडगढ़ (राज.)
Truckers Community Livelihood Strengthening Project, Nimbahera-Chittorgarh 2022-23

ट्रकर्स कम्युनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेंथनिंग प्रोग्राम एक सामाजिक और आर्थिक पहल है, जिसका उद्देश्य ट्रक ड्राइवरों और उनके परिवारो को आजिविका में मजबूत करना है। यह कार्यक्रम ट्रक ड्राईवरों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने उनके आर्थिक अवसरो को बढाने और उनके कार्यो से जुडी विभिन्न चुनौतियो का समाधान करने पर केंद्रित है। ट्रक ड्राइवरों की नौकरी एक कठिन और जोखिमपूर्ण कार्य है, जो अक्सर शारिरीक, मानसिक और सामाजिक समस्याओ का कारण बन सकता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य इन्हीं समस्याओ को दूर करना और ड्राईवरों के जीवन में स्थिरता और खुशी लाना है। अरावली व चोला मण्डलम के वित्तीय सहयोग से संचालित ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा संचालित प्रोग्राम सक्षम ट्रक चालको व सहायको के लिए नेत्र स्वास्थ्य जॉच केन्द्र निम्बाहेडा से शुरूआत की गई इस कार्यक्रम में अब तक 1670 ट्रक चालको व सहायको की ऑखो की जॉच की गई 14 केम्प किए गये जिन में से एवरेज ओ.पी.डी. 60 कि गई।

हमारे स्वास्थ्य मित्र द्वारा आसपास ट्रांसपोर्ट में जाकर विजन सेन्टर के बारे में जानकारी दी जाती है VC में आते ही ड्राईवर को सेनेटाईज किया जाता है थर्मल स्केनर से तापमान मापा जाता है। ड्राईवर के पास मास्क ना हो तो मास्क उपलब्ध करवाया जाता है।

हाईट व वजन मापा जाता है, ब्लड प्रेशर व शुगर की जॉच की जाती है OPD रजिस्टर में ट्रक चालक के लाईसेन्स के द्वारा जानकारी ली जाती है।

ड्राईवर का फॉर्म भरा जाता है। A.R. मशीन द्वारा ऑखो की जॉच की जाती है। रिफलेक्शन किया जाता है।

ड्राईवर को नजदिक या दूर से देखने में समस्या होने पर चश्में का नम्बर निकाला जाता है। नेत्र सहायक द्वारा चश्मा वितरण रजिस्टर में एन्ट्री व हस्ताक्षर कराया जाता है व चश्मा वितरण किया जाता है।

खान पान व बेहतर दृष्टि के लिए सुझाव दिए जाते है। साथ ही अपने ट्रक चालको व सहायको को इस विजन सेन्टर और यहॉ की सुविधाओ के बारे में जानकारी देने का आग्रह किया जाता है।

कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य-

❖ **आजिविका के नये अवसर प्रदान करना**- ट्रक ड्राईवरों के लिए वैकल्पिक रोजगार और आय के स्त्रोत विकसित करना, जिससे उनकी आय में वृद्वि हो सके और वे अपने परिवार की बेहतर देखभाल कर सके। इसमें कौशल विकास और प्रशिक्षण के अवसर शामिल है, ताकि वे नई व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल हो सकें।

❖ **स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार** - ट्रक ड्राईवरो के लिए स्वास्थ्य सेवाये और सही जीवनशैली को बढावा देना। इसमें मानसिक स्वास्थ्य, शारिरीक स्वास्थ्य और पारिवारिक जीवन में सुधार के लिए कार्यशालाएं और परामर्श शामिल है।

❖ **कौशल विकास और प्रशिक्षण**- ड्राईवरो को विभिन्न प्रकार के कौशल प्रशिक्षण दिये जाते है, जैसे कि वित्तीय प्रबंधन, कम्प्यूटर कौशल या अन्य व्यावसायिक प्रशिक्षण जिससे वे अपनी क्षमताओ का विस्तार कर सके और अन्य क्षेत्रों में भी काम कर सके।

❖ **सामाजिक सुरक्षा योजनाएं**- ट्रक ड्राईवरों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओ जैसे बीमा, पेंशन या स्वास्थ्य सुरक्षा के बारे में जानकारी देना और उन्हें इन योजनाओ का लाभ उठाने में सहायता करना।

❖ **सामुदायिक सशक्तिकरण**– ट्रक ड्राईवरों के समुदाय में एकजुटता और सशक्तिकरण को बढावा देना। यह कार्यक्रम ड्राईवरों के बीच सहयोग और समझ बढाने उनके अधिकारो की रक्षा करने और सामाजिक कल्याण की दिशा में काम करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है।

कार्यक्रम के लाभ-

❖ **आर्थिक स्थिरता:** – ड्राईवरों के लिए अतिरिक्त आय स्त्रोतो का निर्माण होने से उनकी आर्थिक स्थिरता बढती है, जिससे वे अपनी जरूरत को बेहतर तरिके से पूरा कर सकते है।

❖ **स्वास्थ्य में सुधार:**– मानसिक और शारिरीक स्वास्थ्य को लेकर कार्यक्रम में शामिल प्रयासो के कारण ड्राइवरों की समग्र जीवनशैली में सुधार होता है, जो उनके कार्य प्रदर्शन को बेहतर बनाता है।

❖ **कौशल में वृद्धि:**– ड्राइवरों को नए कौशल और प्रशिक्षण के माध्यम से रोजगार के नए अवसर मिलते है, जिससे वे केवल ट्रक ड्राईविंग तक ही सिमित नहीं रहते, बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी कार्य कर सकते है।

❖ **सामाजिक सुरक्षा:**– ट्रक ड्राईवरो को जीवनभर सुरक्षा के उपाय मिलते है, जैसे बीमा, पेंशन और स्वास्थ्य सुरक्षा जो उनके भविष्य को सुरक्षित बनाते है।

❖ **सामूहिक सशक्तिकरण:**– यह कार्यक्रम ड्राईवरो के समुदाय में सहयोग और आपसी समर्थन की भावना को बढावा देता है, जिससे वे अपनी समस्याओ को सामूहिक रूप से हल कर सकते है।

कार्यक्रम के निष्कर्ष:-

ट्रकर्स कम्युनिटि लाइवलीहुड स्ट्रेंथनिंग प्रोग्राम ट्रक ड्राईवरो के जीवन में महत्वपूर्ण सुधार लाने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। यह न केवल उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाता है बल्कि उन्हें सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य सुरक्षा के लिहाज से सशक्त बनाता है। इस कार्यक्रम के मदद से ड्राईवरों को अपने परिवारो के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने में मदद मिलती है और उनके कामकाजी जीवन को संतुलित और सुरक्षित बनाने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध होते है।

ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम – भीलवाड़ा
Truckers Community Livelihood Strengthening Project - Bhilwara 2022-23

कार्यक्रम की पृष्टभूमि:– चोलामण्डलम व अरावली के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा आयोजित ट्रकर कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम का उद्घाटन 16.06.2019 को भीलवाड़ा व चित्तौड़गढ़ हाइवे 79 पर शुभारम्भ किया। इस अवसर पर संस्थान सचिव शंकरसिंह रावत ने ट्रक, ट्रेलर व बस चालकों के विषय में कहा कि वाहन चालको को समय–समय पर स्वास्थ्य जाँच करानी चाहिए। ट्रक, ट्रेलर व बस चालकों के सामने चौकन्ना रहना, यातायात नियमों का पालन, भूख–प्यास, समय पर गंतव्य स्थान पहुंचने समेत कई तरह के दबाव होते है। इन सब के बीच संयमित रहकर बिना तनाव के भारी वाहन चलाना किसी चुनौती से कम नहीं है। इन शिविरों के माध्यम से वाहन चालको को लाभ प्राप्त होगा। इस वर्ष कार्यक्रम के तहत ट्रक चालक के स्वास्थ्य शिविर केम्प किये गये जिसमें 4409 ट्रक ड्राइवरो / क्लीनरों की आँखों व स्वास्थ्य की जाँच कर 1309 लोगो को चश्में बाँटे गये।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य चित्तौडगढ और भीलवाडा जिलो में ट्रक ड्राईवरों और उनके परिवारो की

आजिविका को मजबूत करना है। यह कार्यक्रम ट्रक ड्राईवरों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए एकीकृत दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल विकास और सामाजिक सुरक्षा पर ध्यान दिया जाता है। यह पहल विशेष रूप से ट्रक ड्राइवरो के समुदाय को सशक्त बनाता है व उनकी समस्याओ का समाधान करने और उनके जीवन में स्थिरता लाने के लिए डिजाइन की गई है।

कार्यक्रम के उद्देश्य:-

1. ट्रक ड्राईवरो के लिए वैकल्पिक रोजगार के अवसर उत्पन्न करना जैसे कि कौशल विकास प्रशिक्षण, छोटे व्यवसाय की स्थापना के लिए मदद और अन्य आर्थिक गतिविधियों में उन्हें भागीदार बनाना। इससे ड्राईवरों को अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने का अवसर मिलता है।

2. ट्रक ड्राईवरो को विभिन्न प्रकार के कौशल जैसे वित्तीय प्रबंधन, बुनियादी कंप्यूटर कौशल और अन्य व्यवसायिक प्रशिक्षण दिये जाते है। इससे उन्हें न केवल ट्रक ड्राईवरो में सुधार मिलता है बल्कि वे अन्य क्षेत्रों में भी काम करने के लिए तैयार होते है।

3. ड्राइवरों के शारिरीक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए स्वास्थ्य जांच, नियमित चिकित्सा परामर्श, और जीवनशैली में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। साथ ही उन्हें स्वास्थ्य बीमा, चश्में और अन्य चिकित्सा सेवायें प्रदान की जाती है।

4. सामाजिक सुरक्षा और कल्याण योजनाएं– ड्राइवरो को सामाजिक सुरक्षा जैसे बीमा, पेंशन और स्वास्थ्य सुरक्षा के बारे में जागरूक किया जाता है। इसके जरिये उन्हें सुरक्षित भविष्य के लिए आर्थिक सुरक्षा मिलती है।

5. सामुदायिक सशक्तिकरण– ट्रक ड्राईवरो के समुदाय को एक जुट करने और उनके अधिकारो के बारे में जागरूक करने के लिए सामुदायिक कार्यशालाओं और कार्यक्रमो का आयोजन किया जाता है। यह कार्यक्रम ड्राइवरों को उनके सामाजिक, आर्थिक और शारिरीक अधिकारो के प्रति जागरूक करता है और उन्हें अपने समाज में सशक्त बनाने का प्रयास करता है।

6. रोजाना हो रहीं सड़क दुर्घटनाओं को कम करना।

7. समय न मिल पाने के कारण जो ट्रक ड्राईवर व क्लीनर आँखों की जाँच नहीं करवा पाते हैं उन्हें उनके रास्ते में ही आँखों की जाँच के केन्द्र उपलब्ध करवाना।

8. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करना व बेहतरीन जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।

9. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना।

10. कम आय के कारण ट्रक ड्राईवर व क्लीनर अपनी आँखों की जाँच नहीं करवा पाते हैं इस समस्या को दूर करने के लिए उन्हें इस कार्यक्रम के माध्यम से उनके कार्यस्थल पर आँखों की जाँच की सेवायें व चश्में आसानी से उपलब्ध करवाना।

11. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को अपनी आँखों की जाँच करवाने के साथ–साथ अपने परिवार के सदस्यों को भी उनकी आँखों की देखभाल करने के प्रति जागरुक करने के लिए प्रेरित करना।

12. ट्रक ड्राईवर व क्लीनर आँखों मे जलन होने, पानी आने, कम दिखाई देना आदि समस्याओं पर ध्यान न दे कर जानकारी के अभाव में इन समस्याओं को सामान्य समझ कर ध्यान नहीं देते हैं इसलिए उन्हें उनकी आँखों के

प्रति जागरुक करने के लिए आवश्यक जानकारी दी गयी। आँखों की रोशनी कम होने पर ये सभी समस्याएं होती है व इससे बचाव व उपचार करना आवश्यक है।

13. आँखों से समबन्धित समस्या दूर करने के लिए उन्हें आसान उपाय बताना जैसे– पोष्टिक आहार लेना, समय–समय पर आँखों की जाँच करवाना, कम रोशनी में काम न करना, समय पर सही उपचार लेना आदि जिससे वे अपनी आँखों की देखभाल अच्छे से कर सके।

14. उन्हें स्वस्थ रहने के फायदे बताना तथा आँखों के अतिरिक्त सरकार द्वारा चलाई जा रही अन्य परियोजना के माध्यम से अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याओं का भी समय पर उपचार करवाने व स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करना।

कार्यक्रम के लाभः–

◂ **आर्थिक सुधारः–** ड्राइवरो को रोजगार के नए अवसर और वैकल्पिक आय के स्त्रोत मिलते है, जिससे उनकी आय में वृद्वि होती है।

◂ **स्वास्थ्य में सुधारः–** कार्यक्रम के माध्यम से ड्राइवरो को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं और जीवनशैली के बारे में जानकारी मिलती है, जिससे उनकी कार्यक्षमता में सुधार होता है।

◂ **कौशल में वृद्विः–** ड्राइवरो को व्यावसायिक कौशल के बारे में प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे वे नई नौकरी की संभावनाओ के लिए तैयार होते है।

◂ **सामाजिक सुरक्षाः–** ट्रक ड्राइवरो को सामाजिक सुरक्षा योजनाओ और बीमा के बारे में जानकारी मिलती है, जिससे वे भविष्य में आर्थिक सुरक्षा प्राप्त कर सकते है।

◂ **सामूहिक सशक्तिकरणः–** यह कार्यक्रम ड्राईवरो के समुदाय को एकजुट करता है और उन्हें उनके अधिकारो के लिए संघर्ष कर सकते है।

कार्यक्रम के निष्कर्षः–

ट्रकर्स कम्युनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेंथनिंग प्रोग्राम– चित्तौडगढ–भीलवाडा ने ट्रक ड्राइवरो और उनके परिवारो की जीवनशैली में सुधार लाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाये है। इस पहल के द्वारा ट्रक ड्राइवरो को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त किया गया है, बल्कि उनकी स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा को भी सुनिश्चित किया गया है। इस कार्यक्रम से उन्हें अपने जीवन में स्थिरता, बेहतर स्वास्थ्य और सुरक्षित भविष्य की दिशा में काम करने का अवसर मिला है।

कार्यक्रम की गतिविधियॉः–

संस्था द्वारा विजन सेन्टर पर 3297 ड्राइवर व सहायक की आँखों की जाँच की गई तथा दिनांक 24.09.2020 से 22.03.2021 तक केम्प लगाये गये जिसमें 1112 ड्राइवर व सहायक की आँखों की जाँच की गई। इस प्रकार ड्राइवर व सहायक की आँखों की जाँच कर 1309 व्यक्तियों को चश्मा वितरीत किया गया।

1. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच– कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न होटल जैसे नानकपुरा गुरूद्वारा, ग्रीन प्लाजा होटल, लाडी होटल, एच.पी. गैस प्लांट, ए.बी.सी. होटल, भारत गैस प्लांट, इन्डियन गैस प्लांट व बिहारी होटल पर आँखें जाँचने हेतु दिनांक 24.09.2020 से 22.03.2021 तक शिविर आयोजित किये गये है। जिसमें लगभग 4409 ट्रक ड्राइवरो व क्लीनरो की आँखे जाँची गयी है।

2. चश्मों का वितरण– ट्रक ड्राईवरो व क्लीनरो की आँखों की जाँच करने के बाद यदि उन्हे देखने में परेशानी होती है तो आँखों की जाँच के अनुसार समस्या का पता कर उन्हें पास व दूर के चश्में वितरीत किए गये। जिनको पास की नजर में परेशानी होती है उन्हें पास की नजर का चश्मा उसी वक्त दे दिया जाता था और जिन्हें दूर की नजर में परेशानी होती है उनके लिए चश्मा ऑर्डर किया जाता था। जो एक सप्ताह बाद आ जाता है और ट्रक ड्राईवरो के वापस आने पर उन्हे दे दिया जाता है। इस कार्यक्रम में 1309 चश्मे वितरीत किए गए।

3. जागरूकता फैलाना– ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम के द्वारा सभी ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों के जीवन बीमा, एक्सीडेण्ट बीमा करवाने के साथ ही समय–समय पर बी.पी., शुगर चेक करवाने, मासिक स्वास्थ्य जाँच, आँखों की जाँच करवाने, पोष्टिक आहार खाने व काम के साथ–साथ अपनी सेहत को भी महत्वता देने इत्यादि के बारे में जागरूकता फैलायी गयी।

4. प्रचार-प्रसार कर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरो को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना- ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम अन्तर्गत पेम्पलेट बाँट कर व बेनर लगाकर प्रचार–प्रसार किया जाता है तथा ज्यादा से ज्यादा ड्राईवरों को जोडने का प्रयास किया गया।

पीपीडीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम

PPDC Training Program 2022-23

पी.पी.डी.सी. (प्रसंस्करण एवं उत्पाद विकास केन्द्र) आगरा के वित्तीय सहयोग से खायडा किसान समृद्वि प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड से जुडी SC/ST महिलाओ को प्रशिक्षण उपलब्ध करवाये गए जिसमें अपनी आय वृद्वि के लिए स्थानिय अवसरों का उपयोग एवं लघु कार्य जिसमें पापड–मंगोडी सिलाई कार्य छोटे पशुपालन घरेलू सब्जी उपयोग हेड सब्जी क्यारिया आदि के बारे में प्रशिक्षित किया गया जो उनके लिये बहुत उपयोगी रही।

पीपीडीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य:

◂ **उत्पादकता सुधारना:-** पीपीडीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य उद्योगो में उत्पादकता बढाने के लिए कर्मचारियो और प्रबंधको को बेहतर तकनीकि और प्रबंधकीय कौशल प्रदान करना है। इसमें उत्पादन प्रक्रिया को अधिक कुशल बनाने, मशीनो के उपयोग को अनुकूलित करने और समय प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

◂ **गुणवत्ता नियंत्रण और सुधार:-** इस कार्यक्रम में गुणवत्ता नियंत्रण और गुणवत्ता सुधार के बारे में प्रशिक्षण दिया जाता है, ताकि उद्योग अपने उत्पादो और सेवाओ की गुणवत्ता को बेहतर बना सके। इसमें नए गुणवत्ता मानको, सर्वश्रेष्ठ प्रैक्टिसेस और गुणवत्ता मानको के पालन के बारे में बताया जाता है।

◂ **कर्मचारी कौशल विकास:-** पीपीडीसी कार्यक्रम का उद्देश्य उद्योग के कर्मचारियो को कौशल विकास के अवसर प्रदान करना है, जिससे वे नई तकनीको और प्रक्रियाओ से परिचित हो सके। यह उनके व्यक्तिगत और पेशेवर विकास में योगदान करता है।

◂ **प्रबंधन कौशल में सुधार:-** कार्यक्रम के तहत प्रबंधको को नेतृत्व, टीम प्रबंधन, संकट प्रबंधन और रणनीतिक योजना बनाने के कौशल पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे वे बेहतर निर्णय ले सके और संगठन की सफलता में योगदान कर सके।

◂ **नई तकनीको का परिचय:-** पीपीडीसी कार्यक्रम में नवीनतम तकनीको और टूल्स के बारे में जानकारी दी जाती है, जो उत्पादकता और गुणवत्ता सुधार के लिए उपयोगी है। यह उद्योगो को उनके उत्पादन प्रक्रिया में नवीनतम नवाचारो को अपनाने में मदद करता है।

पीपीडीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम के लाभ:-

◂ **उत्पादकता में वृद्धि:-** उद्योगो में कार्यकुशलता और उत्पादकता में सुधार होता है, जिससे उनकी उत्पादन

◀ **गुणवत्ता सुधारः**– उत्पादो और सेवाओ की गुणवत्ता में सुधार होता है, जिससे उपभोक्ता की संतुष्टि बढती है और उद्योग की प्रतिस्पर्धा में वृद्वि होती है।

◀ **कर्मचारी सशक्तिकरणः**– कर्मचारियो को नए कौशल और ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे उनका आत्मविश्वास बढता है और कार्य में उनकी दक्षता में सुधार होता है।

◀ **संगठन की सफलता में योगदानः**– बेहतर प्रबंधन कौशल और कार्यकुशलता से संगठन की सफलता की संभावनाएं बढती है और यह बाजार में अपनी स्थिति को मजबूत करता है।

◀ **नवाचार को बढावा देनाः**– पीपीडीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम उद्योगो को नई तकनीको और प्रक्रियाओ के बारे में जानकारी देता है, जिससे वे नवाचार और उन्नति के रास्ते पर आगे बढ सके।

निष्कर्षः– पीपीडीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम उद्योगो और संगठनो के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहल है, जो उन्हें उत्पादन प्रक्रिया को अधिक कुशल और प्रभावी बनाने, गुणवत्ता में सुधार करने और कर्मचारियो के कौशल को बढाने में मदद करता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से भारतीय उद्योगो को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढने का अवसर मिलता है, और वे अपने उत्पादो और सेवाओ की गुणवत्ता को बेहतर बना सकते है।

बाजरा प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन कार्यक्रम 2022–23
Millet Processing And Value Addition Cluster, Ajmer 2022-23

Scheme of Fund For Regenration of Traditional Industries (SFURTI)

लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय भारत सरकार स्फूर्ति प्रोग्राम के अर्न्तगत नोडल एजेन्सी, पी.पी.डी.सी. आगरा, तकनीकी सहयोग तथा निसर्ग संस्थान भोपाल के मार्गदर्शन से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा खायडा किसान समृद्धि प्रोड्युसर कम्पनी लिमिटेड में बाजरा प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन प्रोसेसिंग यूनिट लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के वित्तिय सहयोग से स्थापित की जा रही है। जिसमें कम्पनी से जुड़े किसानों को अपना उत्पादन स्थानीय स्तर पर बिना किसी खर्चे के बिक्री किया जा सकेगा। प्रोसेसिंग यूनिट से स्थानीय कारीगरों को रोजगार उपलब्ध होगा। जिसमें शेयर धारकों को अपनी आय बढ़ाने हेतु अवसर मिला है।

बोर्ड बैठक– खायडा किसान समृद्धि प्रोड्युसर कम्पनी लिमिटेड की मासिक बैठक व साप्ताहिक बैठकों का आयोजन किया गया। जिसमें भारत सरकार स्फूर्ति प्रोग्राम के अर्न्तगत दिये गये वित्तिय सहयोग से निर्माण कार्य के निरिक्षण हेतु जिम्मेदारी दी गई तथा निर्माण कार्य को स्फूर्ति के निर्णयानुसार किये जाने हेतु मान्य किया गया।

क्षमता वर्धन बैठक– बाजरा एवं मूल्य संवर्धन कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत सरकार के वित्तिय सहयोग से संचालित प्रोसेसिंग यूनिट से होने वाले लाभ तथा मिलने वाले रोजगार तथा नवीनतम कार्यो के बारे में किसानों का क्षमता वर्धन किया गया।

जागरूकता बैठक–किसानो को प्रोसेसिंग से होने वाले लाभ तथा किसानों की युनिट में अहम भूमिका के बारे में जागरूक किया गया तथा कम्पनी से जुडने हेतु प्रेरित किया गया। जागरूकता बैठक विभिन्न गाँवों में की गई। जिसमें स्थानीय स्तर पर उत्पादित फसलों का मूल्य संवर्धन कैसे किया जा सकता है, विषय पर चर्चा के माध्यम से जागरूक किया गया।

इसी प्रोग्राम में किसान उत्पादक संगठन, पं.स. भिनाय–अजमेर में नाबार्ड के वित्तिय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बुबानी द्वारा अजमेर जिला मुख्यालय से 80 किलोमीटर दक्षिण में नेशनल हाईवे–79 से 27 किलो मीटर दक्षिण पूर्व में पंचायत समीति–भिनाय के ग्राम बुबकिया व लामगरा में चार किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनीयों का गठन किया गया। जिसका किसानो के सहयोग द्वारा संचालन किया जा रहा हैं। चारो कम्पनियाँ कम्पनी एक्ट मे रजिस्टर्ड की हुई है। किसानो द्वारा उत्पादन की गई फसलों तथा उपयोग करने वाले लोगो के बीच में महाजन वर्ग द्वारा किया जाने वाला बिचौलियापन समाप्त करके व उत्पादन कर्ता प उपभोक्ता के मध्य दूरी कम करने हेतु प्रयास किया जा रहा है। किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी का मुख्य कार्य किसानों को समय पर प्रमाणित खाद, बीज व दवाईयाँ उपलब्ध करवाकर उनकी आय में वृद्धि करना है। कम्पनी द्वारा किसानों को उत्पदित फसलों के अच्छे दाम दिलवाने हेतु व नेफड को बिक्री करवाने हेतु तथा पोर्टल पर रजिस्टेशन करवाने हेतु प्रेरित किया जाता है। किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी के माध्यम से किसानों को एक अच्छा मंच मिला है। जहाँ किसानों को सरकारी योजनाओं की जानकारी समय पर मिल जाती है। समयानुसार आवेदन करने पर किसानों को याजना का लाभ प्राप्त हो जाता है। किसान समृद्धि

प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड का संचालन किसानों के खर्चो में कमी करवाने तथा प्रमाणित बीजों व नवीन तकनीकी का प्रयोग कर किसानों की आय वृद्धि के लिये किया जा रहा है।

पंचायत समीति भिनाय में किसानों के साथ कम्पनी गठन हेतु बैठक की गई। जिसमें किसानों की आवश्यकता को समझा गया, कम्पनी गठन के बारे में विस्तार से बताया गया और किसानों के स्वामित्व वाली कम्पनी रजिस्ट्रेशन के बारे में जानकारी दी गई। जिसमें भैरूखेड़ा–रैण किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी को मूंग उत्पादन पर कार्य करना निश्चित किया गया।

भैरूखेड़ा-रैण-उदयपुरखेड़ा-खायड़ा किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड कमेटी गठन व रजिस्ट्रेशन-

कम्पनी रजिस्ट्रेशन के लिये क्षेत्र में किसानों का सर्वे किया गया। जिसमें जिन किसानों के पास 1 से 15 बीघा जमीन है, उन किसानों के साथ बैठक की गई और उन्हें कम्पनी सदस्य बनने हेतु प्रेरित किया गया तथा साथ ही उन्हें किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी के उद्देश्य के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। उन्हीं किसानों द्वारा कम्पनी बोर्ड का गठन किया गया। कम्पनी रजिस्ट्रेशन हेतु 5 सदस्य प्रमोटर तथा 5 सदस्य डायरेक्टर के रूप में नियुक्त किये गये। जिनके डिजिटल हस्ताक्षर से कम्पनी एक्ट में कम्पनीयों का रजिस्ट्रेशन किया गया। सभी सदस्यों के सामूहिक प्रयास से कम्पनी का संचालन किया जा रहा है।

कम्पनी के मुख्य उद्धेश्य -

- ❖ किसानों की आय में वृद्धि करवाना।
- ❖ किसानों को तकनीकी जानकारी उपलब्ध करवाना।
- ❖ उत्पादनकर्ता व उपभोक्ता के मध्य दूरी को कम करना।
- ❖ समय पर अच्छी गुणवत्ता वाला खाद–बीज उपलब्ध करवाना।
- ❖ उत्पादित फसलों की ग्रेडिंग करवाना।

शेयर धारकों की आय में वृद्धि हेतु प्रयास-

किसानों की आय वृद्धि एवं उनकी फसल की जोखिम को कम करने हेतु किसानों द्वारा लिये गये फसली ऋण को बैंक में समयानुसार जमा करवाने हेतु प्रेरित किया गया। सभी किसानों के फसली ऋण वापसी के समय पर जमा होने से किसानों का फसली बीमा हुआ परन्तु 20 प्रतिशत किसानों को ही फसली ऋण का लाभ प्राप्त हो सका। जिससे किसानों के द्वारा दिया जाने वाला ऋण अदायगी में ब्याज पर छुट का सहयोग मिला। किसानों द्वारा उत्पादित फसलों की बिक्री नेफड कम्पनी को करवायी गई। आवश्यक दस्तावेज–पटवारी रिर्पोट तैयार करवाकर ऑनलाइन एस.एम.एस. आने पर उनके माल की तुलाई हुई। जिसमें मूंग की फसल किसानों द्वारा बेची गई जिसमें–

बीज की उपलब्धता-

किसानों की आवश्यकता पूर्ति हेतु समयानुसार प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाया गया। जिसमें मूंग, उडद तथा बाजरा मुख्य रहा। अच्छी कम्पनीयों के प्रमाणित बीज जिसमें "दिनकर सीडस व सी.एस.वी.–15 हैदराबाद" ज्वार की अच्छी पैदावार मिली। मगर वर्षा की अनीयमितता के कारण किसानों की फसल भी खराब हुई। स्थानीय बीज जिन किसानों द्वारा किया गया उनकी पैदावार 15–20 प्रतिशत उत्पादन कम हुआ।

कम्पनी बोर्ड बैठक-

कम्पनी बोर्ड बैठक लॉकडाउन के चलते कम हुई। जिसमें आगामी वर्ष की कार्य योजना तथा गत माह में किये गये कार्यो की समीक्षा नहीं होने के कारण कम्पनी की आय नहीं के बराबर रही।

पी.आई.एम.सी. बैठक-

किसान समृद्धि प्रोड्युसर कम्पनी लिमिटेड द्वारा किये गये कार्यो की समीक्षा तथा कार्यक्रम का मूल्यांकन किया जाता है। कार्यक्रमों की निगरानी हेतु कमेटी का गठन किया हुआ है। जिसमें नाबार्ड डी.डी.एम. अधिकारी, कृषि पर्यवेक्षक, संस्थान सचिव किसान संगठन बोर्ड सदस्यों द्वारा अपनी योजनाओं की जानकारी प्रदान की गई तथा किसानों को लाभ प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया गया।

ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण ईकाई परियोजना, नागौर (राज.)
Guargum And Isabgol Processing Cluster, Nagaur (Raj.) 2022-23

(निरंतर एग्रो फूड प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड)

ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा नागौर जिले में गत 12 वर्षो से महिला आजीविका, स्वास्थ्य एवं किसानों के विकास के क्षेत्र में कार्य किये जा रहे हैं । संस्थान द्वारा नाबार्ड के सहयोग से नागौर जिले के रिया बड़ी के ग्राम बासनी जग्गा में एक किसान उत्पादक संगठन "निरंतर एग्रो फूड प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड का गठन 08 मार्च 2016 में किया गया। जिसके अंतर्गत किसानो के हितों में निम्नलिखित उद्देश्य हेतु कार्य किया गया :–

- किसानो को जागरूक करना
- किसानों में क्षमता वर्धन करना
- किसानों को कृषि की उन्नत तकनीको को प्रशिक्षण के माध्यम से जानकारी देना
- किसानों को जैविक खेती के लिए प्रेरित करना
- किसानों को उन्नत किस्म की खाद बीज एवं कीटनाशक उपलब्ध करवाना आदि कार्य करना ।

निरंतर एग्रो फूड प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड के किसानों के अच्छे प्रयासों के कारण ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा भारत सरकार के सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के वित्तीय सहयोग से किसानों के परम्परागत कृषि पद्धति में आज के समय के साथ परिवर्तन करके उनकी आय में वृद्धि हेतु संचालित स्फूर्ति योजना में चयन किया गया । जिसके अंतर्गत निम्न संस्थाओ का सहयोग प्राप्त हुआ हैं :–

नोडल एजेंसी : प्रसंस्करण और उत्पाद विकास केंद्र, आगरा (उ.प्र.)

तकनीकी एजेंसी : निसर्ग एग्री फाउन्डेशन, भोपाल (म.प्र.)

स्फूर्ति योजना के अंतर्गत ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा कम्पनी क्षेत्र में होने वाली ग्वार व इसबगोल की फसलों के प्रसंस्करण हेतु एक एस.पी.वी (SPV) का निर्माण किया गया जिसका नाम "ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण इकाई " रखा गया, जिसका मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- इकाई क्षेत्र के किसानों की ग्वार व इसबगोल की उपज को सही मूल्य पर खरीदना।

किसानों से खरीदी उपज को प्रसंस्करण करके ग्वारगम व इसबगोल की भूसी बनाना साथ ही बचे हुए कचरे से पशु आहार का निर्माण करना।

- किसानों के बेहतर लाभ के लिए ब्रांडिंग, पैकेजिंग एवं विपणन करना ।
- किसानों को देश के अन्य कृषि आधारित इकाइयों से जोड़ना ।
- किसानों को भारत सरकार की अन्य ग्रामीण विकास योजनाओ की विस्तृत जानकारी देना ।
- इकाई के व्यवसाय से होने वाले शुद्ध लाभ का 40 प्रतिशत हिस्सा किसानों को हस्तांतरित करना ।

इस इकाई के अंतर्गत ग्राम बासनी जग्गा के आस–पास के 15 ग्रामों से लगभग 800 से अधिक किसानो को जोड़ा जा चूका है । इस ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण इकाई के अंतर्गत ग्राम बासनी जग्गा में कम्पनी के द्वारा लगभग 3 बीघा भूमि क्रय की हैं, जिसमे की ग्वार व इसबगोल के प्रसंस्करण के लिए **10000 Sq Feet** में सामान्य सुविधा केंद्र (**CFC**) का निर्माण किया जा रहा हैं, जिसमे ग्वार व इसबगोल को प्रसंस्करण के लिए मशीन रखने के साथ उपज का भण्डारण किया जा सके ।

बोर्ड ऑफ डायरेक्टर की बैठक : इस ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण इकाई के सफल क्रियान्वयन हेतु निरंतर एग्रो फूड प्रोड्यूसर कम्पनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर की मासिक बैठक में इकाई में होने वाले कार्यो की समीक्षा की जाती हैं, जिसमे भारत

सरकार के द्वारा प्राप्त अनुदान राशि का सही तरीके से इस्तेमाल किया जा सके साथ ही इसमें पारदर्शिता रखी जा सके ।

परियोजना क्रियान्वयन समिति की बैठक :- भारत सरकार के निर्देशानुसार परियोजना क्रियान्वयन समिति का गठन किया गया हैं , जिसके सदस्य निम्न प्रकार हैं–

इस परियोजना क्रियान्वयन समिति की बैठक का आयोजन प्रत्येक माह किया जाता हैं जिसमे की इकाई के कार्यो के साथ ही आर्थिक लेखे–जोखे पर विचार विमर्श किया जाता है, साथ ही इसके विकास हेतु सुझाव दिये जाते हैं । इस समिति की बैठक का किसी आकस्मिक स्थिति में आयोजन किया जा सकता हैं ।

जागरूकता एवं क्षमता वर्धन प्रशिक्षणों का आयोजन : स्फूर्ति योजना के अंतर्गत इकाई के किसानों हेतु जागरूकता एवं क्षमता वर्धन प्रशिक्षणों का आयोजन करके उनको उन्नत कृषि, जैविक कृषि, पशुपालन, बैंकिंग,राज्य एवं भारत सरकार की कृषि सम्बंधित योजनाओं की जानकारी एवं सामाजिक सुरक्षा की योजनाओ की जानकारी प्रदान की जाती हैं । इसके अंतर्गत 26 जागरूकता प्रशिक्षणों में 800 किसानो को लाभान्वित किया साथ ही 25 क्षमता वर्धन प्रशिक्षणों में 750 किसानो को लाभन्वित किया गया ।

परिचयात्मक भ्रमण का आयोजन : इकाई के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर व जागरूक किसानो (7 सदस्य) हेतु 2 दिवसीय पूर्व में संचालित ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण यूनिट के लिए परिचयात्मक भ्रमण के लिए गुजरात के सिद्धपुर एवं जोधपुर में मशीनों की कार्यप्रणाली समझी साथ ही उनके विपणन की विस्तृत जानकारी ली । कृषि विज्ञान केंद्र नागौर में इकाई के 15 किसानो के लिए 1 दिवसीय परिचयात्मक भ्रमण का आयोजन किया गया जिसमे वैज्ञानिको ने किसानो को अधिक उपज प्राप्त करने के उपाय, मिट्टी प्रशिक्षण, जैविक खेती आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई ।

सामाजिक कार्यो का आयोजन :- ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण इकाई के द्वारा समय–समय पर इकाई क्षेत्र में सामजिक विकास हेतु कार्य किये जाते हैं, जिससे की किसानो के साथ उनके परिवारों से भी जुड़ा जा सके । इकाई के द्वारा निम्न सामाजिक पर्वों पर कार्य किये गये –

- विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण का कार्य।
- कोरोना महामारी से पीड़ित गरीब किसानो को खाद सामग्री का वितरण।
- मकर संक्रांति पर बच्चो एवं महिलाओं के लिए प्रतियोगिता का आयोजन के साथ बच्चो को पुरुस्कार वितरण, मिठाई वितरण, गौशाला में गायो के लिए चारे की व्यवस्था ।
- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं बालिका दिवस पर महिला एवं किशोरियों किसानो को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी प्रदान की गई।
- शहीद दिवस पर रक्तदान शिविर का आयोजन एवं रक्तदाताओं को हेलमेट वितरण।

इसी कार्यक्रम के तहत किसान उत्पादक संगठन –नागौर कार्यक्रम में ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा नागौर जिले के ग्राम पंचायत लाड़पुरा के ग्राम–बासनी जग्गा में किसान उत्पादक संगठन का संचालन किया जा रहा है। नाबार्ड के वित्तीय सहायता व मार्गदर्शन से कम्पनी एक्ट मे मार्च, 2016 मे रजिस्टर्ड करवाया गया। कम्पनी के माध्यम से किसानो की आय वृद्धि करवाने के लिए 800 किसान सदस्यों को कम्पनी से जोडा गया।

कम्पनी के मुख्य उद्धेश्य –

- किसानो मे जागरुकता बढाना।
- किसानो का क्षमतावर्धन करना।
- किसानो को तकनीकी जानकारी देना।
- समय पर गुणवत्तायुक्त खाद–बीज उपलब्ध करवाना।
- उपयोगकर्ता व उत्पादनकर्ता के मध्य दूरी कम करना।
- उत्पादित फसलों की ग्रेडिंग करवाना।

पंचायत समिति–रियाबडी की ग्राम पंचायत–लाड़पुरा के ग्राम–बासनी जग्गा में निरन्तर एग्रो फूड प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड का संचालन किया जा रहा है। किसान संगठन के सफल संचालन हेतु निम्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है –

मासिक बैठक – कम्पनी बोर्ड सदस्यों व कम्पनी शेयरधारको द्वारा मासिक बैठक आयोजित की जाती है। जिसमें कार्यो की समीक्षा तथा आगामी माह की कार्य योजना तैयार की जाती है।

पी.आई.एम.सी. बैठक – प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग कमेठी द्वारा हर त्रैमास में किये कार्यो की मॉनिटरिंग की जाती है। साथ ही आगामी त्रैमास मे किये जाने वाले कार्यो के बारे मे जानकारी प्राप्त की जाती है। जिसमे नाबार्ड अधिकारी, कृषि पर्यवेक्षक, संस्थान सचिव, कम्पनी बोर्ड सदस्यो की उपस्थिति मे कम्पनी सी.ई.ओ. द्वारा कम्पनी कार्यो से अवगत करवाया जाता है।

वर्मी कम्पोस्ट खाद यूनिट – कम्पनी द्वारा किसानों को अपने खर्चे कम करने तथा उत्पादन में वृद्धि करने हेतु वर्मी कम्पोस्ट खाद – 100 यूनिटो का निर्माण करवाया गया तथा यूनिट निर्माण हेतु किसानो को कृषि विभाग द्वारा प्रति यूनिट 12000 / – रुपये अनुदान उपलब्ध करवाए जाने हेतु आवेदन कराये गये जिनकी सब्सीडी शीघ्र किसान को मिल जायेगी।

खाद बीज दुकान – शेयरधारको व अन्य किसानो को समय पर खाद–बीज उपलब्ध करवाया गया है साथ ही स्थानिय क्षेत्र मे अच्छा उत्पादन देने वाली फसलो जिसमे – मूंग, मूंगफली के रिसर्च बीजो का भी उपयोग किया गया। जिनका किसानो का अच्छा उत्पादन मिला।

शैक्षणिक भ्रमण – किसानो को नवीन जानकारी व तकनीकी जानकारी उपलब्ध करवाने काजरी संस्थान का तीन दिवसीय भ्रमण करवाया गया। जिसमे कृषक मेले मे किसानो ने जानकारी प्राप्त की तथा विभिन्न बीजीय किस्मो से अवगत हुए।

अन्य गतिविधि :-

- ❖ गाँव के नवयुवक सगठन में युवतियों को जोडने का प्रयास किया।
- ❖ लोगों के मुद्दे के अलावा अन्य समस्या पर मद्द की।
- ❖ पानी की टंकियाँ ठीक करवाई।
- ❖ स्कूल में ज्योतिबा राव फूले पर कार्यक्रम रखा।
- ❖ बालिकाओं की शिक्षा को लेकर महिलाओं को मूवी दिखाई।
- ❖ पानी की समस्या को लेकर गाँव में सर्वे किया और लोगों से टंकी व नल के लिए राय ली गई।

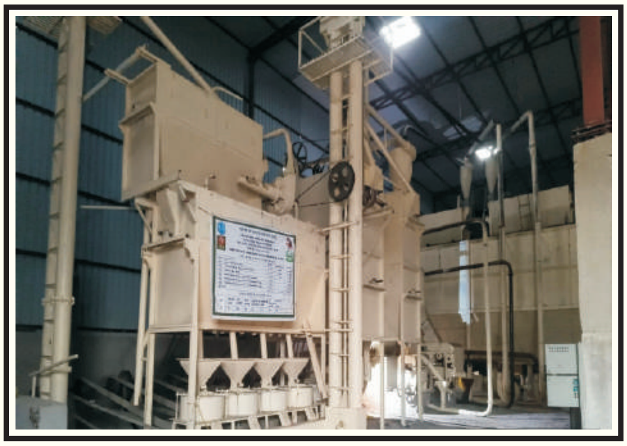

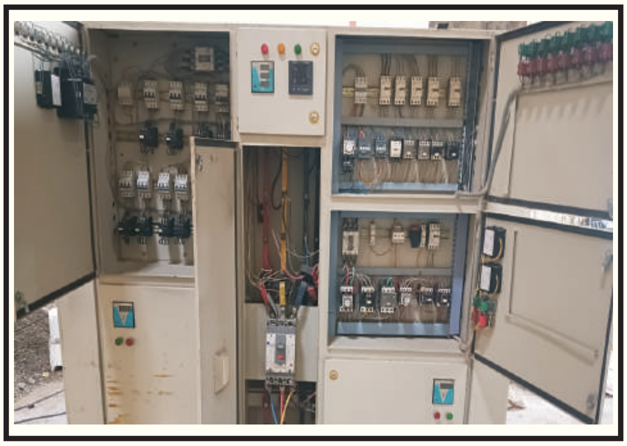

स्वयं सहायता समूह गठन कार्यक्रम 2022–23
Self Help Group Formation Programme 2022-23

ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी–अजमेर के द्वारा पिछले 26 वर्षो से अजमेर व नागौर जिले में महिला सशक्तिकरण हेतु महिला स्वयं सहायता समूह गठन व संचालन निरन्तर किया जा रहा है। गठित महिला समूहों में महिलाओं को संगठित किया जाता है। क्योकि समूह स्तर पर महिलाओं को एक मंच प्रदान किया जाता है। इस मंच पर महिलायें एकत्रित हो कर सर्वप्रथम आर्थिक स्तर के बारे में मंथन करके महिलाओं को छोटी–छोटी बचत करना सिखाया जाता है। समूह गठन के 6 माह बाद समूह को बैंक से जोडा जाता है। ताकि महिलाओं को वित्तीय जानकारी मिले। बैंक में समूह के नाम से बचत खाता खोला जाता है और जब समूह को लोन की आवश्यकता हो तब समूह बैंक से लोन लेने के लिए आवेदन कर सकता है।

उद्देश्य–

1. अलग–अलग महिलाओं को एक समूह में संगठित करना।
2. महिलाओं को जागरूक करना।
3. महिलाओं को समूह के माध्यम से बैंक से जुडाव करना।
4. बैकों से ऋण की पूर्ति करना।
5. महिलाओं को स्वरोजगार के प्रति जागरूक करना।
6. महिलाओं के हुनर को निखारना।
7. सरकारी व गैर सरकारी संगठनों से जुडाव करना।
8. प्रशिक्षणों के माध्यम से क्षमतावर्धन करना।
9. शिक्षित करना।
10. स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाना।
11. महिलाओं द्वारा बनाये गये उत्पाद को उचित दामों में बजार में बेचना।
12. बाल विवाह व कन्या भ्रूण हत्या को रोकना।
13. ज्यादा से ज्यादा महिलाओ को रोजगार से जोडना।

रणनीति :–

- ❖ महिलाओं को जागरूक करके सरकारी व गैर सरकारी गतिविधियों में ज्यादा सहभागी बनाना।
- ❖ क्षेत्र, गाँव व महिलाओं का चयन करके समूह गठन करना।
- ❖ बचत की आदत निरन्तर डालना।
- ❖ बैंकों से जोडकर ऋण उपलब्ध करवाना।
- ❖ महिलाओं की आवश्यकता पढने पर महिलाओं से मद्द करवाना।

समूह बचत खाता खुलवाना– महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन करके 6 माह बाद ICICI बैंक में समूह का बचत खाता खुलवाया जाता है ताकि समूह का बैंक से जुडाव हो सके और बैंक की गतिविधियों को जान सके। जब समूह को ऋण लेने की आवश्यकता हो तो बैंक लोन के लिए समूह आवेदन कर सके।

समूह सदस्यो को बीमा से जोडना– महिला समूह के सदस्यो को बीमा के प्रति जागरूक करना और लोन का बीमा के साथ जीवन बीमा से जोडना ताकि भविष्य में महिला के साथ किसी प्रकार की दुर्घटना हो तो उसके परिवार को बीमा से अधिक सहायता मिल सके।

शिविरों का आयोजन– स्वयं सहायता समूह से जुडी महिलाओं को स्वास्थ्य शिविरों से जोडकर लाभान्वित किया। जैसे कि महिला कानून, श्रमिक के अधिकार, श्रमिक कार्ड बनवाना, परिवार नियोजन शिविर इत्यादि शिविरों के साथ हर वर्ष महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। उसमे महिलाओं द्वारा किये गये कार्यो व अनुभवो का आपस में बताया जाता है। ताकि एक दूसरी महिलाओं से प्रेरणा मिलती है।

समूह प्रशिक्षण– महिला स्वयं सहायता समूहों का क्षमतावर्धन, लीडरशीप, लघु उद्योग व समूह संचालन के प्रशिक्षण समय–समय पर दिये जाते है। ताकि समूहों की गुणवत्ता बनी रहे और समूह सदस्यों को रोजगार से जोडा जा सके।

समूह ऑडिट– संस्थान द्वारा गठित समूहों की हर वर्ष ऑडिट की जाती है, और समूहों की वित्तीय स्थिति का आंकलन किया जाता है। ऑडिट के बाद समूह लाभांश भी सदस्यो को वितरण किया जाता है।

समूह ग्रेडिग– महिला स्वयं सहायता समूहो की गुणवता को जाँचने के लिए ग्रेडिंग की जाती है और ग्रेडिंग के बाद जो भी समूह मे खामिया रहती है उसके लिए योजना बनाकर प्रशिक्षण दिया जाता है।

समूह बैंक लोन– जब समूह गठन के 6 माह बाद समूह का बचत खाता खुल जाता है तब समूह बैंक से लोन लेने के लिए आवेदन करता है। बैंक लोन लेने के समय समूह के सभी सदस्यों का उपस्थित होना आवश्यक होता है ग्रुप फोटो ली जाती है ताकि भविष्य में कोई महिला इनकार नही कर सकती है क्योकि ग्रुप फोटो के साथ लोन फाईल में समूह के सभी सदस्यों की जानकारी रहती है। लोन लेते समूह लोन राशि, लोन किश्त कितने माह में चुकता करना और बैंक लोन पेनल्टी के बारे में सभी सदस्यो को जानकारी रहती है।

आजीविका वर्धन गतिविधियाँ– ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी–अजमेर के द्वारा गठित महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन व संचालन किया जा रहा है। समूहो को बचत के साथ–साथ आजिविका वर्धन की गतिविधियों की जानकारी दी जाती है। और समय–समय पर प्रशिक्षित किया जाता है। ताकि महिला आत्मनिर्भर बने और आर्थिक रूप से भी सक्षम हो सके। संस्थान विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से आजीविका वर्धन गतिविधियों से जोडने में सफल होती है। ताकि समूह की महिला बैंक से लोन लेती है उसे समय पर बैंक को वापिस चुकता करने में सक्षम होती है।

कोरोना के प्रति जागरूकता :– संस्थान द्वारा समूह की महिलाओं को कोरोना रूपी महामारी से स्वयं को व अपने समुदाय को सुरक्षित रखने के लिये आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। जिसके अर्न्तगत ग्रामीण क्षेत्रों में संस्थान द्वारा गाँव वालों को मास्क, सेनेटाइजर, सनेटरी नेपकिन खाद्य सामग्री (2 किलो चावल, 5 किलो आटा, 2 किलो आलू, 2 किलो प्याज, 1 किलो शक्कर, 500 ग्राम चाय, 1 किलो नमक, 500 ग्राम मिर्ची, 250 ग्राम धनिया, 250 ग्राम हल्दी आदि) के पैकेट बनाकर वितरित किया गया। राहगीरो को चप्पलें व खाने के पैकेट बाँटें गये।

प्रमुख गतिविधियॉः–

- **SHG गठन और सक्रियता:** GMVS ने ग्रामीण क्षेत्रो में नए SHGs का गठन किया और पहले से मौजूद SHGs को सशक्त किया। इसके तहत महिलाओ को आत्मनिर्भर बनाने के लिए समूहो को वित्तीय योजनाएॅ और बाजार के अवसर प्रदान किए गये।
- **वित्तीय सहायता:** नाबार्ड के माध्यम से SHGs को लोन की सुविधा दी गई ताकि वे विभिन्न लघु व्यवसाय शुरू कर सकें, जैसे कृषि उत्पादन, हस्तशिल्प और अन्य छोटे उद्यम। इससे महिलाओ को आर्थिक आत्मनिर्भरता मिली।
- **प्रशिक्षण और क्षमता वर्धन:** SHG के सदस्यो को वित्तीय प्रबंधन, बचत योजनाओं, ऋण प्रबंधन और उद्यमिता जैसे विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। इससे उनकी व्यवसायिक क्षमता और आत्मविश्वास में वृद्वि हुई।
- **समूहो को बाजार से जोडना:** GMVS ने SHG समूहो के उत्पादो को बाजार तक पहुंचाने के लिए नेटवर्किंग और विपणन के अवसर प्रदान किए। इससे उत्पादो की बिक्री बढी और महिलाओ की आय में वृद्वि हुई।

उद्देश्यः–

- **महिला सशक्तिकरणः**– महिलाओ को आर्थिक दृष्टि से सशक्त बनाना और उन्हें निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करना।
- **आर्थिक विकासः**– SHG समूहो के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक सुधार लाना और आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढाना।
- **सामाजिक उत्थानः**– महिलाओं और ग्रामीण समुदायो के बीच सामाजिक जागरूकता बढाना और उनका सामूहिक विकास सुनिश्चित करना।

संस्थान की भावी सोच

❖ महिलाओं को सशक्त बनानें के लिए संस्थान के प्रत्येक कार्यक्रम में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।

❖ महिलाओं को स्वास्थ्य सुविधायें पहुँचाकर जागरूकता बैठकों द्वारा स्वास्थ्य के प्रति सचेत करना।

❖ स्वच्छ भारत अभियान के तहत गाँवों को स्वच्छ बनाने में सहयोग करना।

❖ महिला साक्षरता कार्यक्रम को बढ़ावा देना।

❖ ग्रामीण गरीब समुदाय को पशुपालन एवं अन्य स्थानीय रोजगार के अवसरों से परिचित करा कर उन्हें स्वरोजगार हेतु प्रेरित करना।

❖ महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वरोजगार की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाना।

❖ नियमित रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं देते रहना।

❖ पंचायती राज एवं अन्य सरकारी एवं गैर–सरकारी योजनाओं में महिलाओं की भूमिका सुनिश्चित करना।

❖ जैविक खेती एवं उन्नत कृषि तकनीक एवं पशुपालन के लिए लोगों में जागरूकता लाकर इस हेतु उन्हें प्रेरित करना।

❖ ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय सेवाएं उपलब्ध कराना।

❖ महिला स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाना।

❖ महिला साक्षरता कार्यक्रम में महिलाओं की सहभागिता बढ़ाना एवं शिक्षित करना।

❖ जागरूकता बैठकों के माध्यम से महिलाओं एवं बालिकाओं को स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न मुद्दों पर जागरूक करना।

❖ ट्रक ड्राईवरों तथा क्लीनरों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन कर स्वास्थ्य एवं नैत्र जाँच करना।

❖ माइग्रेंट लोगो को विभिन्न STD बिमारीयों, HIV/AIDS की जानकारी देकर सुरक्षित यौन संबन्ध हेतु प्रेरित करना।

GRAMIN MAHILA VIKAS SANASTHAN

Arbridged Receipt and Payment Account for the year ending 31/03/2023

RECEIPTS	AMOUNT	PAYMENTS	AMOUNT
Opening Balance		Nabard Expenses	
Cash In Hand	9304	1000 SHG Program Staff Salary	2228300.00
Cash at Bank	569969	Gvargum & Isabgol Program Expenses	2702884.00
		Royal commonwealth Society Uber	450000.00
Grant Received :-		TI Project Exp.	3376703.00
ICICI-Project	4474013	Raahi Project Exp.	1239142.00
Grant From Royal commonwealth Society	420000	Trucker Community Project Exp.	2318486.00
Grant From T.I. RSACS	2299374	PPDC Exp	25500.00
Grant From Sight Savers Rahi	363728	Other Projects	1356920.00
Grant From Rayban Rahi	926488	Bank Charges	2532.00
Grant From Truckers Project (Aravali)	1977773	Audit Fees	102320.00
Grant From SFURTI Millet	800000	Admin Expenses	186090.00
Samunnati SHG	95672	Closing Balance	
Hans cc	631002	Cash In hand	9937.00
Bank Interest	5102	Cash At Bank	1550084.00
Other Receipts	2959873		
Membership Fees	16500		
	15548798		**15548898**

Arbridged Balance Sheet as on 31.03.2023

LIABILITIES	AMOUNT	ASSETS	AMOUNT
General Fund	8,20,643	**Fixed Assets**	1376934
		Current Assets, Loans & Advance	
Current Liabilities		Grant Receivabke and others	2640646
Loan	27,11,876	Cash In Hand	9937
Sundry Creditors	20,45,082	Cash At Banks	1550084
	55,77,601		**55,77,601**

For S S Verma & Co
Chartered Accountants

S.S. VERMA & CO. CA Chartered Accountants

(S. S. Verma)
Prop.
06/09/2023, Jaipur

For Gramin Mahila Vikas Sansthan

सचिव
ग्रामीण महिला विकास संस्थान
बूबानी, किशनगढ़
जिला अजमेर (राज.)

(S[illegible] Singh Rawat)
Secretary

सुर्खियों में ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम, अजमेर

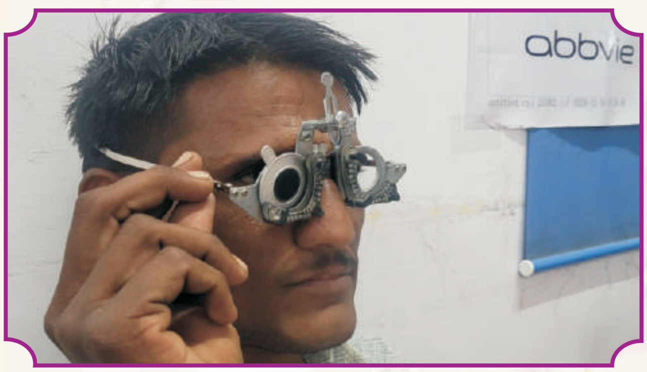

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

जनहित व सेवा कार्यों में लगातार सक्रिय...

संस्थान की गतिविधियाँ

सुर्खियों में ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण कार्यक्रम, नागौर

Annual Report, 2022-2023 (GMVS-AJMER)

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

जनहित व सेवा कार्यों में लगातार सक्रिय...

संस्थान की गतिविधियाँ

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

जनहित व सेवा कार्यों में लगातार सक्रिय...

संस्थान की गतिविधियाँ

सेवाओं में बढ़ते कदम

ग्रामीण महिला विकास संस्थान (GMVS)

ग्राम व पोस्ट–बूबानी, वाया–गगवाना

जिला–अजमेर 305023 (राज.) भारत

मोबाईल : +91–9672979032, 9672979033

E-mail : bubanigmvs@gmail.com, gmvsajmer@gmail.com

Visit us : www.gmvs.org.in